सम्पादकीय 2
समुन्नत राष्ट्र की सुदृढ़ आधारशिला है **माँ की संस्कारशाला**

महाकुम्भ प्रयागराज 3
गायत्री परिवार की सेवाओं से लाभान्वित हुए लाखों श्रद्धालु

शान्तिकुञ्ज प्रतिनिधि का यूरोप प्रवास 7
रॉक्लॉ, पोलैण्ड के मेयर ने दिया सर्वोच्च नागरिक सम्मान

उत्तराखण्ड के एक गाँव में आगजनी से बेघर हुए परिवारों की सहायता के लिए पहुँचा शान्तिकुञ्ज 8

समाज निर्माण एवं सांस्कृतिक पुनरुत्थान के लिए समर्पित

E-mail: news@awgp.org

पाक्षिक

प्रज्ञा अभियान

संस्थापक, संरक्षक : युगऋषि पं श्रीराम शर्मा आचार्य एवं वंदनीया माता भगवती देवी शर्मा

1 मार्च 2025

वर्ष : 37, अंक : 17
प्रकाशन स्थल : शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार
प्रकाशन तिथि : 12 फरवरी 2025
वार्षिक चंदा : ₹ 80/-
वार्षिक चंदा (विदेश) : ₹ 1000/-
प्रति अंक : ₹ 4/-

RNI-NO.38653/ 1980 Postel R.No.UA/DO/DDN/ 16 / 2024-26 Licenced to Post Without Prepayment vide WPP No. 04/2024-26

।। ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरिण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्।।

उस प्राणस्वरूप, दुःखनाशक, सुखस्वरूप, श्रेष्ठ, तेजस्वी, पापनाशक, देवस्वरूप परमात्मा को हम अंतःकरण में धारण करें। वह परमात्मा हमें सन्मार्ग में प्रेरित करे।

राष्ट्र के लिए त्याग कितना और क्या?

महात्मा विनोबा भावे जी द्वारा सन् 1934 में धुलिया, महाराष्ट्र में दिये गए उद्‌बोधन के संपादित अंश, जो हमें परम पूज्य गुरुदेव के युग निर्माण आन्दोलन में भागीदारी के आह्वान और हमारी सक्रियता के संबंध में आत्मविश्लेषण का अवसर प्रदान करते हैं।
(विनोबा साहित्य-12, पृष्ठ 328-334 से संकलित)

हम घर में एक-दूसरे का खयाल रखते हैं। यही बात राष्ट्र के शासन-प्रबंध में भी होनी चाहिए। घर में उदारता, प्रेम, सहानुभूति और सहयोग आवश्यक है। जिस रीति और जिस वृत्ति से हम पारिवारिक समस्याओं को हल करते हैं, उसी रीति और उसी वृत्ति से देश और संसार की समस्याएँ भी हल करनी चाहिए।

कुछ लोग सरलभाव से महात्मा गाँधी पर यह आक्षेप करते हैं कि वे लोगों से बहुत अधिक अपेक्षा रखते हैं। नेता को इस प्रकार जनता की शक्ति से अधिक माँग नहीं करनी चाहिए। शक्ति से परे जनता को नहीं तानना चाहिए, शक्ति से परे उनसे त्याग की अपेक्षा नहीं करनी चाहिए, आदि-आदि।

मनुष्य कितना त्याग कर सकता है, इसका परिवार में पता चलता है। अगर सूक्ष्म दृष्टि से देखें, तो ज्ञात होगा कि पूर्वजों से प्राप्त गुण-संचय का विकास करने के लिए परिवार में जितना त्याग करना पड़ता है, उसकी तुलना में गाँधीजी द्वारा हमसे माँगा जानेवाला त्याग कुछ भी नहीं है। बीस वर्ष पहले यूरोप में महायुद्ध छिड़ा। वह चार वर्ष चला। वह युद्ध शंकराचार्य के शिष्यों ने अद्वैत की स्थापना के लिए नहीं छेड़ा था, बल्कि वह सकाम और स्वार्थप्रिय लोगों की उफान थी। उस युद्ध के समय जर्मनी की आबादी छः करोड़ मान लीजिए। जर्मनी ने लगभग एक करोड़ सैनिक खड़े किये। इसका अर्थ यह हुआ कि भारत अपनी छत्तीस करोड़ (*सन् 1934 में*) की आबादी में से उसका छठा हिस्सा, अर्थात् छः करोड़ सैनिक भी सविनय कानून-भंग की लड़ाई के लिए खड़ा करता, तो भी वह त्याग मनुष्य-स्वभाव और मनुष्य-शक्ति की दृष्टि से परे नहीं कहा जाता।

भारत में जो कानून-भंग की लड़ाई हुई, उसमें अधिक-से-अधिक डेढ़ लाख लोगों ने भाग लिया। किंतु जर्मनी की सैनिक संख्या के हिसाब से हमें छः करोड़ आदमी खड़े करने चाहिए थे। महात्माजी के झंडे के नीचे तो कुल डेढ़ लाख लोग एकत्र हुए। क्या यह त्याग मनुष्य की शक्ति से परे है?

जाहिर है कि जर्मनी के त्याग के सामने हमारा त्याग कुछ भी नहीं है। उससे इस त्याग की तुलना ही नहीं हो सकती। कुछ आदमी गोलियों से मरे, कुछ लाठी चार्ज में घायल हुए और कुछ को जेलों में कष्ट उठाने पड़े। मान लें कि इनकी संख्या दस हजार थी। फिर भी कहना होगा कि जर्मनी के त्याग के सामने हमारा यह त्याग कुछ भी नहीं। जर्मनी का त्याग यदि मनुष्य-स्वभाव के अनुरूप है, तो महात्मा गाँधी द्वारा हमसे माँगा जानेवाला त्याग मनुष्य-स्वभाव के परे कैसे?

हमारी संस्कृति, हमारा आचरण

एक तरफ तो आप भारतीय संस्कृति का अभिमान रखते हैं। मानते हैं कि भारतीय संस्कृति महान और श्रेष्ठ हैं। कहते हैं कि हमारी संस्कृति सबसे पुरानी है। हमारे यहाँ अनेक ऋषि-मुनि, साधु-संत और वीर पुरुष हो गये। यहाँ ब्रह्मविद्या का प्रादुर्भाव हुआ। आप मानते हैं कि हमारी संस्कृति उदार, सुन्दर, यज्ञ-प्रवण और स्वर्गीय है। परंतु आपका त्याग जर्मनी के त्याग का दो-सौवाँ हिस्सा भी नहीं। फिर भी कहते हैं कि यह त्याग मनुष्य-शक्ति से परे है। धन्य हैं आप!

हिंदूधर्म की रचना करनेवाले विचारशील पुरुषों ने तय किया कि औसत रूप से चार आदमियों में एक वानप्रस्थी हो। चार मनुष्यों में से एक मनुष्य देश की, समाज की सेवा करे। इस बात को सब स्मृतियों ने मान्य किया है, वे सब मानती हैं कि वानप्रस्थी एक उत्तम शिक्षक होता है। देश की नयी पीढ़ी का निर्माण करने के लिए त्यागी, अनुभवी, तपस्वी पुरुष चाहिए। चौथाई का अनुपात छोड़ दें और 5 प्रतिशत ही मान लें। इस हिसाब से यदि धुलिया की आबादी चालीस हजार है, तो यहाँ दो हजार वानप्रस्थी, सेवक होने चाहिए। तब यह धर्मशास्त्रकार जो माँग कर रहे हैं, क्या वह भी अस्वाभाविक ही है?

सामाजिक दायित्व अवश्य निभायें

हिंदूधर्म पुकार-पुकारकर कहता है कि नरदेह दुर्लभ है। संतों ने भी कह-कहकर गला सुखा दिया कि मनुष्य की योनि मिली है, तो इसको कुछ सार्थक कर लो। आप कहेंगे ''यह सच है कि हर आदमी को मदद करनी चाहिए। हर आदमी का काम है कि सार्वजनिक कामों में सहयोग दे। परंतु समय खराब आ गया है। व्यापारियों का व्यापार नहीं चलता, किसानों की पैदावार नहीं होती। पैदावार हो भी तो वह बिकती नहीं। नौकरियों में कोई दम नहीं रहा। तब क्या करें?'' इस पर मेरा कहना यह है कि खराब समय आने पर भी यदि घर में पाँच बच्चे हों, तो सब आपस में बाँटकर खाते हैं या नहीं? इसी प्रकार सार्वजनिक सेवा को छठा बेटा मानिए और उसके हिस्से में जो आये, उसे भी दीजिए। समाज को अपने कुटुंब का एक अंग ही मानिए। खराब समय आने पर भी बाप अकेला तो नहीं खाता। जो कुछ होता है, सबको देता है। कम मिलेगा, पर सबको मिलेगा। अकेले खाना महापाप है। ऋषि कहता है-

मोघमन्नं विन्दते अप्रचेताः। सत्यं ब्रवीमि वध इत् स तस्य नार्यमणं पुष्यति नो सखायं। केवलाघो भवति केवलादी।

यदि तूने यह धन केवल अपने लिए एकत्र किया है, तो यह व्यर्थ है। तूने केवल अपने लिए यह सब अन्न लूट-खसोटकर इतने बड़े-बड़े भंडार बनाये हैं। अरे! तूने ये भंडार नहीं बनाए, यह अन्न नहीं एकत्र किया है। तूने अपना वध कमाया है, वध!

उस छटपटानेवाले निःस्वार्थी ऋषि से बढ़कर हितेषी कौन है? उसमें आपके प्रति कितनी दया है? वह कह रहा है कि अगर आप अकेले खायेंगे, तो पाप के पुतले बनेंगे। आपके ये भरे भंडार व्यर्थ हैं। यह तो आपने अपनी मौत को सँभाल रखा है। जो दूसरों का पोषण नहीं करेगा, किसी की मदद नहीं करेगा, उसके पास जो कुछ है, यह उसका वध ही है।

तुम युग निर्माता हो

कोई कहता है यह कल-युग, यंत्र-युग है। कोई कहता है, कलियुग है। अरे! युग तो वह होगा, जिसे आप निर्माण करेंगे। काल का निर्माण तो आपके हाथों में है। पश्चिमवालों ने कहा यंत्र-युग और तूने उसे मान लिया? अजीब है तेरी यह श्रद्धा!

गाँधीजी ने दस वर्ष में चरखे को खड़ा कर दिखाया या नहीं? खादी की कहीं चिंदी तक नहीं दीखती थी। अब सर्वत्र भंडार खुल गये या नहीं? वह महापुरुष 'यह यंत्र-युग है, कैसे होगा?' यों कहकर बैठ नहीं गया। निराकार काल को आकार देनेवाले आप! आप जैसा चाहेंगे, वह युग होगा। काल को मोड़ने की सामर्थ्य तो आपके दृढ़ निश्चय में है।

क्या मनुष्य की अंतिम साँस पर ही उसकी मदद के लिए दौड़ेंगे? ऐसा न करें। जरा पहले ही उसके पास पहुँचिए। वह जिंदा है, तब तक दौड़-धूप कीजिए। उनके धंधों को सहारा दीजिए। उनकी बनायी चीजें खरीदिए। गाँवों की चीजें लें। थोड़ी महँगी पड़े तो भी सहन करें। गरीबों को उद्योग मिलेगा। स्वाभिमानपूर्वक उसके मुँह में कौर जायेगा। ऐसा करेंगे, तभी जो भयानक संकट आना चाहता है, वह टलेगा। ईश्वर हमें सद्‌बुद्धि दे।

ब्रिटिश संसद में गूँजा गायत्री महामंत्र

ब्रिटिश संसद में शान्तिकुञ्ज प्रतिनिधि आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी

आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी ने मंत्री, सांसद एवं गणमान्यों को परम पूज्य गुरुदेव के वैज्ञानिक अध्यात्मवाद से विश्वशांति का मार्ग दिखाया

लंदन। यूनाइटेड किंगडम

युग परिवर्तन के महान लक्ष्य और संकल्प के साथ प्रज्वलित परम पूज्य गुरुदेव पं. श्रीराम शर्मा आचार्य जी द्वारा प्रज्वलित अखण्ड दीपक और शक्तिस्वरूपा परम वंदनीया माता भगवती देवी शर्मा जी के अवतरण के शताब्दी वर्ष-2026 में इस परिवर्तन का आधार बन रही आध्यात्मिक चेतना का क्रान्तिकारी विस्तार हो रहा है। युवा युग नायक आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी के नेतृत्व में यह दिव्य प्रवाह पूरी विश्व मानवता को आलोकित कर रहा है। इसी कड़ी में 5 फरवरी 2025 को एक अति विशिष्ट उपलब्धि मिली, जब आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी को यूके के ऐतिहासिक संसद भवन में मंत्रियों, सांसदों एवं गणमान्यों तक परम पूज्य गुरुदेव के विचारों को पहुँचाने के लिए आमंत्रित किया गया था।

(शेष समाचार पृष्ठ 7 पर पढ़ें .....)

सतयुग की वापसी और समुन्नत राष्ट्र की सुदृढ आधारशिला है

माँ की संस्कारशाला

परम पूज्य गुरुदेव के सतयुगी संकल्पों को साकार करने के लिए तथा प्रधानमंत्री माननीय नरेन्द्र मोदी जी के स्वतंत्रता की शताब्दी तक भारत को विकसित राष्ट्र बनाने के संकल्प को पूरा करने के लिए घर-घर में 'माँ की संस्कारशाला' का प्रचलन आरंभ किये जाने की आवश्यकता है।

जन्मशताब्दी वर्ष-2026 के पूर्व की यह वेला परम पूज्य गुरुदेव के सतयुगी सपनों और संकल्पों के साकार होने की अनुभूतियों को लेकर आई है। इन दिनों राष्ट्र की सनातन सांस्कृतिक चेतना का जो उभार-विस्तार दिखाई दे रहा है, वह निःसंदेह अत्यंत सुखद अनुभूति करा रहा है। काली अंधियारी रात्रि की विश्रांति और सुप्तावस्था के बाद भोर में सविता देवता की स्वर्णिम किरणें जैसी ऊष्मा, ऊर्जा और आनन्द की अनुभूति कराती हैं, महाकाल के संकल्प, ऋषि चेतना के तप और जाग्रत् आत्माओं की साहसभरी सक्रियता से कुछ वैसी ही अनुभूतियाँ देव संस्कृति दिग्विजय अभियान के साथ जुड़े जनमानस को इन दिनों हो रही हैं।

राजनीतिक परिदृश्य में भी हम परिवर्तन के महान क्षणों से गुजर रहे हैं। वर्तमान में भारत के अमृतकाल में स्वतंत्रता के शताब्दी वर्ष-2047 तक भारत को विकसित राष्ट्र बनाने के संकल्प के साथ कदम आगे बढ़ रहे हैं। इस लक्ष्य की प्राप्ति के लिए दीर्घकालीन योजनाएँ लागू हो रही हैं। देश के यशस्वी प्रधानमंत्री माननीय श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में सारे विश्व में भारत की प्रतिष्ठा बढ़ रही है। दूसरी ओर परम पूज्य गुरुदेव एवं परम वंदनीया माताजी के सूक्ष्म संरक्षण तथा श्रद्धेय डॉ. प्रणव पण्ड्या जी एवं श्रद्धेया शैल जीजी के मार्गदर्शन में अखिल विश्व गायत्री परिवार के युवा युगनायक आदरणीय डॉक्टर चिन्मय पण्ड्या जी के नेतृत्व में युग प्रवर्तक ऋषि परम पूज्य गुरुदेव का चिंतन और उनकी योजनाएँ विश्व के प्रतिष्ठित मंचों और प्रभावशाली महानुभावों तक पहुँच रही हैं। विश्वमानवता भारत की सनातन शिक्षा, संस्कृति और परम्पराओं में अपना उज्ज्वल भविष्य तलाश रही है।

साधन ही नहीं, सृजेता भी चाहिए

सड़कें शानदार हों, किन्तु वाहन चालक अनाड़ी, अनगढ़ ही रह जाये तो अनर्थ ही होगा। ऐसे चालकों द्वारा द्रुतगामी सड़कों पर एक्सीडेंट की संभावना और उससे होने वाला नुकसान अपेक्षाकृत अधिक ही होता है। यही बात राष्ट्र के संदर्भ में भी लागू होती है। मात्र भौगोलिक सीमाएँ राष्ट्र को परिभाषित नहीं करतीं। उस क्षेत्र की विरासत, वहाँ के नागरिक और चली आ रही परम्पराएँ, यह सब मिलकर उस राष्ट्र की परिकल्पना को साकार करते हैं। इसीलिए हमारे देश में जब देश की स्वतंत्रता की शताब्दी तक विकसित राष्ट्र के निर्माण की बात होती है तो 'विरासत और विकास' दोनों को साथ लेकर चलने पर जोर दिया जा रहा है।

पूज्य गुरुदेव का स्पष्ट मानना था कि स्वतंत्रता तो मिल जायेगी, किन्तु हजारों वर्षों की गुलामी की मानसिकता के प्रभाव से देशवासियों को मुक्ति दिलाये बिना देश सही मायनों में स्वतंत्र नहीं हो पायेगा। सुप्त हो चुकी अपनी देव संस्कृति की बुनियाद पर राष्ट्र का सही मायनों में विकास नहीं होगा। इसीलिए उन्होंने स्वतंत्रता मिलने से पूर्व ही सक्रिय राजनीति से अलग हटकर देशवासियों के व्यक्तित्व निर्माण के लिए एक नई आध्यात्मिक क्रान्ति का शुभारंभ कर दिया था। इसके बावजूद आज अपसंस्कृति के प्रभाव से देश में अराजकता, भ्रष्टाचार, अनाचार, अत्याचार, भय, देशद्रोह का जो वातावरण है, उसे निरस्त करने के लिए बड़ी संख्या में राष्ट्र निर्माता, युग सृजेताओं के निर्माण की आवश्यकता है।

जब शिवाजी और महाराणा प्रताप जैसे महान व्यक्तित्वों का उदय हुआ तो आक्रांता मुगलों के विशाल साम्राज्य को चुनौती दी जा सकी। देश की माताओं ने गोखले, गाँधी, मौलाना आजाद, चंद्रशेखर आजाद, वीर भगतसिंह जैसे महापुरुषों का निर्माण किया तो पूरे विश्व पर राज करने वाले अंग्रेजी साम्राज्य की चूलें हिल गयीं। परम पूज्य गुरुदेव एवं परम वंदनीया माताजी ने ऐसी ही महान आत्माओं को अवतरित करने के लिए यह विराट देव परिवार बनाया है। उनकी प्रेरणा, आशीर्वाद और दिव्य संरक्षण ने करोड़ों देशवासियों में राष्ट्रभक्ति का उल्लास जगाया है। आज विश्व में परिवर्तन की जो लहर दिखाई दे रही है, उसके सृजन में अखिल विश्व गायत्री परिवार का बहुत बड़ा योगदान है। जन्मशताब्दी वर्ष-2026 की पूर्ववेला में सच्चरित्र, राष्ट्रप्रेम से ओतप्रोत व्यक्तित्वों के निर्माण का एक और क्रान्तिकारी अभियान आरंभ हुआ है-माँ की संस्कारशाला।

माँ की संस्कारशाला

व्यक्ति ही परिवार, समाज और राष्ट्र की मूल इकाई है। जिस परिवार में सद्गुणी, संस्कारवान व्यक्ति होंगे, उस परिवार का वातावरण स्वतः ही स्वर्ग के समान सुखी और आनन्ददायी बनता जायेगा। सुखी परिवारों से स्वस्थ-सभ्य समाज तथा श्रेष्ठ राष्ट्र का निर्माण होता है। इसीलिए हमारी देव संस्कृति में व्यक्ति निर्माण को सर्वाधिक महत्त्व दिया गया है। गर्भकाल से लेकर मरणोत्तर जीवन को दिशा देने वाली हमारी महान संस्कार परंपरा, पर्व-त्यौहारों की परंपरा सब व्यक्तित्व को निखारने की विधायें ही तो हैं। हमारे देश में देव-दर्शन, तीर्थयात्राओं का मूल प्रयोजन मानवीय आस्थाओं को परिष्कृत कर व्यक्तित्व को उत्कर्ष की ओर ले जाना ही होता है।

मानवीय व्यक्तित्व की बुनियाद माँ के गर्भकाल से ही डल जाती है। सही मायनों में माता-पिता और परिवार के अन्य सदस्यों के आचार, विचार, व्यवहार से प्रभावित होकर बच्चे में जैसे संस्कार बचपन में डल जाते हैं, उन्हीं के अनुरूप आगे उसका व्यक्तित्व बनता जाता है। उम्र बढ़ने के साथ किसी व्यक्ति के विचार, संस्कार, आदतों को बदलना कठिन होता जाता है। इसीलिए अखिल विश्व गायत्री परिवार ने 'आओ गढ़ें संस्कारवान पीढ़ी' अभियान चलाया। इसमें माता के गर्भ धारण के पूर्व से लेकर किशोरावस्था तक व्यक्तित्व को उत्तम विचार और संस्कारों के साँचे में ढाला जा रहा है।

एक अभिनव प्रयोग

गुरुपूर्णिमा-2023 से युवा प्रकोष्ठ, शान्तिकुञ्ज ने 'माँ की संस्कारशाला' शीर्षक से एक ऑनलाइन अभियान प्रारंभ किया था। विगत लगभग डेढ़ वर्ष में लोगों ने इसे बहुत सराहा। हजारों घरों और समूहों में बाल संस्कार संवर्धन एवं स्वाध्याय का एक नया क्रम आरंभ हो गया। लोगों की रुचि और माँग को देखते हुए अब इसे पुस्तकाकार देकर सभी के लिए सहज सुलभ कर दिया गया है। वसंत पंचमी-2025 के दिन श्रद्धेय डॉ. प्रणव पण्ड्या जी एवं श्रद्धेया शैल जीजी ने इस वार्षिक पाठ्यक्रम के प्रथम खण्ड की पुस्तक का विमोचन किया।

'माँ की संस्कारशाला' बच्चों के व्यक्तित्व निर्माण की प्राचीन, लेकिन अत्यंत प्रभावशाली विधा को पुनर्जीवित करने का विशिष्ट प्रयोग है। कुछ दशक पूर्व तक, जब तक संयुक्त परिवारों का प्रचलन रहा, नन्हें बच्चे अपने माता-पिता, दादा-दादी, नाना-नानी से कहानियाँ और लोरी सुना करते थे। वे उनसे रामायण, महाभारत, महापुरुषों की कथाएँ सुनते थे। स्नेह, साहस, सद्भाव, श्रेष्ठ संकल्पों से युक्त ये कथा-कहानियाँ उनके व्यक्तित्व को बड़ी सहजता के साथ महानता की ओर अग्रसर करती रहती थीं। राजा हरिश्चंद्र जैसे आदर्शनिष्ठों की कथाएँ सुनकर बालक मोहनदास सत्य और अहिंसा के पुजारी 'महात्मा गाँधी' बन गये थे। बालक भगत सिंह फिरंगियों के अत्याचार से देश को मुक्ति दिलाने के लिए उत्साहित होकर खेत में बंदूकों की खेती करने निकल गए थे।

समय बदला, हजारों वर्षों की गुलामी के कालखण्ड में अशिक्षा, आतंक के प्रभाव से अभिभावकों की मानसिकता बदलती गई। कथा-कहानियों में भूत-प्रेत, जादू-टोने, टोटके, राक्षसों के काल्पनिक वृत्तांत, परी लोक की तिलस्मी कथाओं का समावेश होता गया। इनसे बच्चों में अंधविश्वास, मूढ़ मान्यताएँ, भय, भेदभाव की मान्यताएँ भी गहरी जड़ जमाती गईं।

प्रगति के बढ़ते क्रम में सिनेमा ने अपना प्रभाव दिखाया। कतिपय अर्थ लोलुप कलाकारों ने मानवीय मन की कमजोरियों का लाभ उठाते हुए अभिव्यक्ति की आजादी के नाम पर सिनेमा में मारधाड़ के हिंसक दृश्य, अश्लीलता, कामवासना को बढ़ावा दिया, जिसने समाज को पतन की ओर अग्रसर किया।

इंटरनेट और सोशल मीडिया के नए युग ने तो दादा-दादी, नाना-नानी तो दूर, माता-पिता और बच्चों के बीच भी इतनी दूरियाँ बढ़ा दी हैं कि उससे बच्चों का व्यक्तित्व उच्छृंखल और दिशाहीन होता जा रहा है। जब अभिभावकों का समय सोशल मीडिया पर अपने मनोरंजन में बीतने लगे, किटी पार्टी और खर्चीले उत्सवों से उन्हें फुर्सत न मिले तो बच्चों को सही दिशा-प्रेरणा कहाँ से मिलेगी? बच्चे स्वयं भी मोबाइल व इंटरनेट के दुष्प्रभावों से बुरी तरह प्रभावित हो रहे हैं। बच्चों का देर रात तक जागना, देर सबेरे तक सोना जैसी आदतों व उनकी जिद्दी और हिंसक प्रवृत्ति से अधिकांश परिवार प्रभावित और परेशान दिखाई देते हैं।

'माँ की संस्कारशाला' उपरोक्त अवांछनीय प्रवाह को मोड़कर बच्चों को उत्कृष्टता के साँचे में ढालने का अत्यंत रोचक और प्रभावशाली प्रयास है। इसके माध्यम से बच्चों में ऐसे संस्कार और विचार विकसित किये जा सकते हैं जो परम पूज्य गुरुदेव के **'मानव में देवत्व के उदय और धरती पर स्वर्ग की स्थापना'** के संकल्प को साकार करेंगे।

पाठ्यक्रम एक दृष्टि में

बच्चों के व्यक्तित्व विकास में कथा-कहानियों का अति विशिष्ट मनोवैज्ञानिक प्रभाव दिखाई देता है। कथा-कहानियों के माध्यम से बच्चों में विचारशीलता जागती है, अच्छी आस्थाएँ एवं मान्यताएँ उत्पन्न होती हैं, जिनके प्रभाव से बच्चों का व्यक्तित्व फूल की तरह खिलता और चंदन की तरह महकता जाता है। आचार्य विष्णु शर्मा की कथा प्रसिद्ध है। उस राज्य के राजकुमार मंदबुद्धि और अयोग्य थे। राजा ने उनकी योग्यता बढ़ाने के लिए कई शिक्षक नियुक्त किये, किन्तु असफल रहे। अंततः आचार्य विष्णु शर्मा ने जानवर पात्रों की कथाएँ सुनाकर राजकुमार को योग्य और राजनीति में दक्ष बना दिया। उनकी ये कथाएँ 'पंचतंत्र' के नाम से मशहूर हैं। भगवान बुद्ध ने सर्वसाधारण के बौद्धिक विकास के लिए जातक कथाओं का सहारा लिया।

परम पूज्य गुरुदेव ने भी बच्चों के व्यक्तित्व विकास के लिए भरपूर साहित्य और कथाओं की रचना की है। युवा प्रकोष्ठ, शान्तिकुञ्ज ने इस विपुल साहित्य से विषयवस्तु संकलित कर बच्चों के व्यक्तित्व विकास के लिए वार्षिक पाठ्यक्रम तैयार किया है, जिसे 'माँ की संस्कारशाला' नाम दिया गया है। यह एक अनूठा और अत्यंत प्रभावशाली प्रयोग है, जो प्रत्येक माता और बच्चों के अभिभावकों को बच्चों के व्यक्तित्व विकास के लिए प्रेरणा एवं मार्गदर्शन देने में बहुत ही उपयोगी सिद्ध हो रहा है। संभवतः अभी तक कहीं ऐसा कोई पाठ्यक्रम नहीं बना है, जो वर्ष में हर दिन के लिए उपलब्ध हो सके।

यह प्रतिदिन का मात्र 15-20 मिनट का ऐसा रोचक पाठ्यक्रम है, जो वर्तमान युग में मोबाइल और टीवी के आकर्षण से बच्चों को बचा कर उन्हें ऊँचे आदर्शों को अपनाने की प्रेरणाएँ देता है। बच्चों में सहज जिज्ञासाएँ उत्पन्न करता है और उनका समाधान भी प्रस्तुत करता है। युवा प्रकोष्ठ, शान्तिकुञ्ज द्वारा अब तक यह पाठ्यक्रम प्रत्येक शनिवार को ऑनलाइन प्रेषित किया जाता रहा है। अब आकर्षक चित्रों के साथ इसे पुस्तकाकार देने से यह सामग्री और भी आकर्षक एवं रोचक हो गई है।

दैनिक पाठ्यक्रम

माँ की संस्कारशाला के दैनिक पाठ्यक्रम को विषय और गुणों के आधार पर साप्ताहिक खण्डों में बाँटा गया है। इसमें प्रतिदिन के लिए उपलब्ध हैं-

- मानवीय मूल्यों पर आधारित सरस कहानियाँ
- हर दिन नए चिंतन/मनन के लिए वेदवाक्य
- सहज जिज्ञासा उत्पन्न करने वाली पहेली/मुहावरे
- मूल्यपरक कविता/गीत/लोरी
- बच्चों की समस्याओं के मनोवैज्ञानिक समाधान
- प्रति सप्ताह अभ्यास के मार्गदर्शक बिन्दु

इस पाठ्यक्रम के सहयोग से निःसंदेह अभिभावक अपने बच्चों को आस्थावान, गुणवान, संस्कारवान, आदर्शोन्मुख बना सकते हैं, उन्हें भौतिकता और इंटरनेट के अवांछनीय आकर्षण से बचा सकते हैं। आवश्यकता है घर-घर इसका प्रयोग होने लगे। ऑनलाइन समूहों में भी यह प्रचलन आरंभ हो। बाल संस्कारशालाओं के लिए भी यह पाठ्यक्रम बहुत उपयोगी है। हर माह की एक पुस्तक के हिसाब से वर्षभर का यह समग्र पाठ्यक्रम 12 भागों में प्रकाशित हो रहा है। इसके प्रथम दो भाग का प्रकाशन हो चुका है। सभी लाभ उठायें, अपने बच्चों को नवयुग की संकल्पना के अनुरूप अपनी देव संस्कृति के साँचे में ढालकर महामानव बनायें।

प्रकृति का पोषण करती युग निर्माणी आस्था

सतत साप्ताहिक अभियान

745 रविवारों में 1,71,112 पौधे लगाए

कोलकाता। पश्चिम बंगाल

गायत्री परिवार यूथ ग्रुप कोलकाता द्वारा सन् 2011 में आरंभ किया गया साप्ताहिक वृक्षारोपण अभियान आज भी उसी श्रद्धा और उत्साह के साथ प्रकृति माता का पोषण कर रहा है। अब तक 745 रविवारों में वृक्षारोपण किया गया। ग्रुप के सदस्य कोलकाता में हों या हरिद्वार में, मुम्बई अश्वमेध यज्ञ में हों या कहीं अन्य स्थान पर, वे रविवार के दिन वृक्षारोपण करना नहीं भूलते। सर्दी, गरमी, वर्षा हर ऋतु में प्रकृति के पोषण के लिए उनकी समुचित योजना और व्यवस्था है।

जीपीवायजी कोलकाता का नेतृत्व कर रहे श्री रवि शर्मा बताते हैं कि उनके इस अभियान से कई नगरों के युवा प्रेरित हुए और गुजरात के वडोदरा, अहमदाबाद, बिहार में जहानाबाद, राजस्थान के बाराँ जैसे कई स्थानों पर साप्ताहिक वृक्षारोपण का आन्दोलन चल रहा है। वे बताते हैं कि अकेले उनके संगठन ने अब तक 745 रविवारों में 171112 पौधे लगाए हैं और उनका पोषण, संरक्षण किया है।

9 फरवरी 2025 वृक्षारोपण अभियान का 745वाँ रविवार था। उस दिन 25 पेड़ लगाये गए। अमर त्यागराजन के जन्मदिन के उपलक्ष्य में 5 पेड़ तथा आयुषी जैन व राहुल जैन के विवाह की वर्षगाँठ के उपलक्ष्य में 5 पेड़ लगाए गए। सीमा जायसवाल एवं राजेश कुमार जायसवाल ने अपने विवाह की वर्षगाँठ पर 5 पेड़ लगाए।

परम पूज्य गुरुदेव की स्मृति में वृक्षारोपण

जहानाबाद। बिहार

परम पूज्य गुरुदेव पं. श्रीराम शर्मा आचार्य जी का मानना था कि उनके शिष्य अगर उनका स्मारक बनाना चाहते हैं तो वे पौधरोपण करके ऐसा कर सकते हैं। इस विचार को अपनाते हुए प्रज्ञा युवा प्रकोष्ठ जहानाबाद ने उनके आध्यात्मिक जन्मदिवस-वसंत पंचमी के दिन सामूहिक वृक्षारोपण का कार्यक्रम आयोजित किया। कार्यक्रम में जिले के कई संगठन और बुद्धिजीवी भी शामिल हुए। वृक्षारोपण अभियान में जुटे परिजनों ने जीवन की अंतिम सांस तक वृक्षारोपण करते हुए आने वाली पीढ़ियों के लिए एक सुरक्षित और समृद्ध पर्यावरण का निर्माण करने का संकल्प लिया।

प्रज्ञा युवा प्रकोष्ठ, गायत्री परिवार जहानाबाद द्वारा अपने 193वें पौधरोपण कार्यक्रम के अंतर्गत 9 फरवरी को मखदुमपुर प्रखंड स्थित प्राथमिक विद्यालय लड़ौआ में पौधरोपण कार्यक्रम सम्पन्न किया।

कोलकाता में जन्मदिन पर वृक्षारोपण करतीं जीपीवायजी से जुड़ी युवतियाँ युवा प्रकोष्ठ जहानाबाद द्वारा वृक्षारोपण

स्वास्थ्य सेवाएँ 208 मरीजों की निःशुल्क नेत्र चिकित्सा

बोकारो। बिहार

गायत्री शक्तिपीठ बोकारो स्टील सिटी में 20 जनवरी 2025 को निःशुल्क नेत्र चिकित्सा शिविर आयोजित किया गया, जिसमें बोकारो जनरल अस्पताल के पूर्व प्रख्यात नेत्र चिकित्सक डॉ. संजय चौधरी और उनकी टीम द्वारा 208 नेत्र रोगियों की जाँच की गई। शिविर में 20 मरीजों को मोतियाबिंद के ऑपरेशन की आवश्यकता थी, जिनका जगजीवन जी महाराज चक्षु चिकित्सालय, पेटरवार भेजकर अगले दिन ऑपरेशन कराया गया।

20 मरीजों के मोतियाबिन्द के ऑपरेशन कराए

कार्यक्रम का उद्घाटन मुख्य अतिथि श्री कुंदन कुमार, मुख्य महाप्रबंधक, नगर प्रशासन और विशिष्ट अतिथि जनप्रतिनिधि श्री संग्राम सिंह ने किया। नेत्र चिकित्सा शिविर के आयोजन में गायत्री परिवार के मुख्य प्रबंधक ट्रस्टी श्री विजय प्रसाद वर्णवाल और गायत्री परिवार के सभी भाई-बहिनों ने अहम भूमिका निभाई।

गायत्री परिवार और गायनी समिति का स्वास्थ्य जागरूकता कार्यक्रम

अलवर। राजस्थान

गायत्री परिवार अलवर और गायनी समिति ऑफ अलवर ने संयुक्त रूप से जैन बी.एड. कॉलेज में बच्चों के लिए एक स्वास्थ्य जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किया। इस कार्यक्रम में बच्चों को एनीमिया, एडोलिसेंस में सामान्य समस्याएँ, सर्वाइकल कैंसर की रोकथाम और व्यवस्थित दिनचर्या के लाभ के बारे में विस्तृत जानकारी दी गई।

डॉ. रिचा गुप्ता (सिटी हॉस्पिटल) और डॉ. सरोज गुप्ता (गायत्री परिवार अलवर की वरिष्ठ कार्यकर्ता) ने बच्चों को गायत्री मंत्र के मानसिक और शारीरिक लाभ के बारे में भी बताया। कार्यक्रम के अंत में प्रिंसिपल श्रीमती अनिता सोनी ने सभी का धन्यवाद किया। स्टाफ और बच्चों ने कार्यक्रम को सराहा और इसे ध्यानपूर्वक सुना।

गायत्री परिवार की सेवाओं से लाभान्वित हुए लाखों श्रद्धालु

प्रयागराज। उत्तरप्रदेश

विश्व पटल पर भारतीय संस्कृति और अध्यात्म के प्रति आस्था को आसमान जैसी बुलंदियाँ प्रदान करने वाले ऐतिहासिक महाकुम्भ प्रयागराज 2025 में अखिल विश्व गायत्री परिवार की गरिमामयी भागीदारी रही। शान्तिकुञ्ज ने मेला क्षेत्र के सेक्टर-10 में सवा पाँच एकड़ क्षेत्र में विशाल पाण्डाल लगाया था। प्रतिदिन प्रातः 9 से 12 बजे तक 51 कुण्डीय गायत्री महायज्ञ और सायं 4 से 6.30 बजे तक प्रज्ञा पुराण कथा का आयोजन किया गया। यज्ञ के समय कुम्भ के पावन क्षेत्र में लोगों ने संस्कार भी बड़ी संख्या में सम्पन्न कराये। शान्तिकुञ्ज के पाण्डाल में विशाल 'देव संस्कृति दिग्दर्शन प्रदर्शनी' लगाई गई थी। श्रद्धालुओं के लिए परम पूज्य गुरुदेव का साहित्य विपुल मात्रा में उपलब्ध था। इस साहित्य विक्रय केन्द्र के माध्यम से मेला क्षेत्र में लगभग 5 लाख रुपये का साहित्य निःशुल्क वितरित किया गया।

ऐतिहासिक कुम्भ मेले में उमड़ी जनमेदिनी के अनुरूप गायत्री परिवार के शिविर में भी बड़ी व्यवस्थाएँ थीं। लगभग 1000 लोगों के ठहरने की तथा देश-विदेश से आने वाले गणमान्यों के ठहरने की विशिष्ट व्यवस्था की गई थी। विशिष्ट पर्वों पर तीन-तीन हजार श्रद्धालुओं को शान्तिकुञ्ज के शिविर में ठहराया गया। सामान्य दिनों में भी शान्तिकुञ्ज के भोजनालय में प्रातः-सायं लगभग चार हजार लोगों ने भोजन प्रसाद ग्रहण किया।

गायत्री परिवार के सैकड़ों कार्यकर्त्ता मेला क्षेत्र में घूम-घूम कर लोगों तक युगऋषि का ज्ञान-अमृत पहुँचाते रहे। सुल्तानपुर उपजोन से 108 कार्यकर्त्ता पूरे कुम्भ काल में बुक स्टॉल तथा साहित्य वितरण के लिए उपलब्ध रहे। स्थानीय 40-50 कार्यकर्त्ता इस हेतु सेवाएँ प्रदान करते रहे।

शान्तिकुञ्ज शिविर की व्यवस्थाओं का संचालन श्री परमानन्द द्विवेदी और श्री नरेन्द्र ठाकुर के नेतृत्व में हुआ। स्थानीय गायत्री चेतना केन्द्र के कार्यकर्त्ता लोगों की सेवा में सतत सक्रिय रहे। गायत्री परिवार के प्रति पूरे मनोयोग से समर्पित एनडीआरएफ कमांडेंट श्री मनोज शर्मा का आवास व्यवस्थाओं में विशेष सहयोग मिला। प्रशासन की ओर से भी स्वच्छता, विद्युत, सुरक्षा आदि की सेवाएँ कुम्भ मेला की उत्तम व्यवस्थाओं के अनुरूप सराहनीय थीं।

ऊपर गंगापूजन एवं कलश यात्रा के साथ हुआ था शान्तिकुञ्ज के शिविर एवं 51 कुण्डीय यज्ञ का शुभारंभ तथा नीचे शान्तिकुञ्ज के शिविर में सम्पन्न हुआ आदर्श विवाह

चर्चित हुआ आदर्श विवाह

प्रयागराज महाकुम्भ स्थित अखिल विश्व गायत्री परिवार के शिविर में सम्पन्न हुआ चि. देश दीपक जोशी एवं आयु. शालिनी का आदर्श विवाह एक ऐसा प्रसंग था, जिसने श्रद्धालुओं को सफल, सुखी दाम्पत्य जीवन की प्रेरणाएँ दीं। सभी समाचार पत्रों ने इस विवाह की विशेषताओं से अवगत कराते हुए, समाचार प्रकाशित किये।

चि. देश दीपक जोशी ज्ञानयज्ञ शाखा के कर्मठ कार्यकर्त्ता श्री जगदीश चंद्र जोशी का सुपुत्र और युवा प्रकोष्ठ प्रयागराज के संयोजक हैं। यह विवाह शान्तिकुञ्ज प्रतिनिधि श्री जितेन्द्र मिश्रा की टोली ने सम्पन्न कराया।

अधिवक्ताओं ने की संकल्प संगोष्ठी

महाकुम्भ श्रद्धा और श्रेष्ठता के संकल्प जगाने वाला ज्ञान पर्व है। इसी परम्परा का अनुपालन करते हुए प्रयागराज में स्थित गायत्री परिवार के शिविर में दिनांक 25 जनवरी 2025 'हमारे मौलिक कर्त्तव्य एवं इक्कीसवीं सदी का संविधान' विषय पर एक संकल्प संगोष्ठी का आयोजन सम्पन्न हुआ। इसमें प्रदेश के अधिवक्ताओं, विश्वविद्यालयों के शिक्षकों एवं छात्रों ने भाग लिया।

शिविर में उत्तर जोन प्रभारी श्री नरेंद्र ठाकुर के अलावा कार्यक्रम के मुख्य अतिथि श्री प्रेम मोहन सिंह पूर्व न्यायाधीश (वाराणसी), श्री जितेन्द्र सिंह अधिवक्ता, सुप्रीम कोर्ट, श्री महेंद्र सिंह अधिवक्ता (अयोध्या), श्री कुमार वैभव तिवारी अधिवक्ता (झाँसी), डॉ. संजय चतुर्वेदी, प्रोफेसर डॉ शैलेन्द्र गुप्त (बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय) ने अपने विचार व्यक्त किये। मौलिक कर्त्तव्यों, संवैधानिक कर्त्तव्यों, विधिक कर्त्तव्यों एवं नैतिक कर्त्तव्यों की विस्तृत व्याख्या हुई। सबका सार यही था कि परम पूज्य गुरुदेव द्वारा रचित 'युग निर्माण सत्संकल्प' का अवलम्बन व्यक्ति को हर प्रकार के कर्त्तव्यों के प्रति निष्ठावान बनाने में समर्थ है।

शान्तिकुञ्ज प्रतिनिधि ने निर्मल गंगा जन अभियान एवं व्यसन मुक्त अभियान को गति देने में विद्वत्सभा के सहयोग का आह्वान किया।

नशामुक्त गाँव बनाने का संकल्प

17 दम्पतियों का विवाह दिवस संस्कार था मुख्य आकर्षण

धमतरी। छत्तीसगढ़ : धमतरी जिले के कुरमातराई में आयोजित पाँच कुण्डीय गायत्री महायज्ञ में जिला समन्वयक श्री दिलीप नाग ने कुरमातराई को नशा मुक्त गाँव बनाने का संकल्प लिया। कई लोगों ने मंच पर आकर नशा न करने का संकल्प लिया, जिन्हें तिलक लगाकर सम्मानित किया गया। कार्यक्रम के दूसरे दिन 17 दम्पतियों ने सामूहिक विवाह दिवस संस्कार कराया।

इस अवसर पर यज्ञ पुरोहित श्री ओम प्रकाश जी ने सभी श्रद्धालुओं से अपना जन्मदिन और विवाहदिन अवश्य मनाने के लिए प्रेरित किया। उन्होंने कहा कि विवाह दिवस संस्कार से पति-पत्नी के बीच परस्पर विश्वास, सम्मान और आत्मीयता का संवर्धन होता है, जिससे दाम्पत्य जीवन सुखमय और खुशहाल रहता है।

कुम्भ नगरी प्रयागराज में

गायत्री चेतना केन्द्र की प्राण प्रतिष्ठा

प्रयागराज। उत्तरप्रदेश

गायत्री चेतना केन्द्र, शिवकुटी, प्रयागराज में नौ कुण्डीय गायत्री महायज्ञ के साथ शिव परिवार की प्राण प्रतिष्ठा हुई। प्राण प्रतिष्ठा कार्यक्रम का संचालन शान्तिकुञ्ज से पहुँचे श्री श्याम बिहारी दुबे जी ने किया। इस अवसर पर उन्होंने परम पूज्य गुरुदेव की अवधारणा के अनुरूप मंदिरों को जनजागरण का केन्द्र बताया और समाज के नवनिर्माण में उनकी भूमिका की चर्चा की। विविध संस्कार हुए, जिन्हें कवि श्री विष्णु कुमार शर्मा ने सम्पन्न कराया। कार्यक्रम को सफल बनाने में ईश्वर प्रसाद त्रिपाठी, डॉक्टर दिव्य सव्यसाची, जोशी जी एवं सुरेश पांडे सहित महिला मंडल का विशेष योगदान रहा।

राष्ट्रीय राजधानी दिल्ली में युवा चेतना केन्द्र

राष्ट्रीय युवा दिवस के अवसर पर दिल्ली के मुखर्जी नगर में युवा चेतना केन्द्र का उद्घाटन हुआ। इस अवसर पर शान्तिकुञ्ज प्रतिनिधि श्री मंगल सिंह गढ़वाल, श्री बालरूप शर्मा, आईएएस राकेश सिंह, आईआरटीएस अखिलेश पांडेय एवं केन्द्र संचालक श्री मनीष कुमार ने विवेकानन्द जयन्ती पर्व मनाते हुए उपस्थित युवाओं को राष्ट्र निर्माण में सक्रिय योगदान देने के लिए प्रेरित किया।

मानव मन पर नवचेतना की गहरी छाप छोड़ रहे हैं यज्ञ-सम्मेलन

महाराणा प्रताप की नगरी में छाया वासंती उल्लास, 500 से अधिक दीक्षा संस्कार हुए

108 कुण्डीय मायत्री महायज्ञ

चित्तौड़गढ़। राजस्थान

8 फरवरी को चित्तौड़गढ़ में आयोजित 108 कुण्डीय महायज्ञ का भव्य समापन हुआ। पूर्णाहुति के समय 2000 से अधिक श्रद्धालुओं ने आहुतियाँ डालीं और 600 से अधिक संस्कार हुए। इनमें गुरु दीक्षा, विवाह संस्कार, पुंसवन संस्कार और नामकरण संस्कार प्रमुख थे। यज्ञ के दूसरे दिन 500 श्रद्धालुओं ने गायत्री महामंत्र की दीक्षा ली। दीपयज्ञ के अवसर पर 5100 दीपों से सजाई दीप मालाएँ दीपावली जैसी छटा प्रदान कर रही थीं।

यज्ञ शान्तिकुञ्ज से पहुँची श्री सुनील शर्मा की टोली ने सम्पन्न कराया। शुभारंभ कई सांस्कृतिक झाँकियों से सुसज्जित सद्ग्रंथ एवं कलश शोभायात्रा से हुआ, जिसमें लगभग 1000 श्रद्धालु शामिल थे। इसमें शासन, प्रशासन और समाजसेवी संगठनों का सक्रिय सहयोग रहा। संत महात्माओं और कर्मठ कार्यकर्त्ताओं का सम्मान किया गया।

यज्ञ में गायत्री मंत्र की दीक्षा लेते परिजन एवं अन्नप्राशन संस्कार कराते शान्तिकुञ्ज प्रतिनिधि

वाहन रैली निकाली

महायज्ञ से पूर्व इसका आमंत्रण जन-जन तक पहुँचाने के लिए 3 फरवरी को आयोजकों ने लगभग 20 किमी लंबी एक विशाल वाहन रैली का आयोजन किया। लगभग 50 वाहन सवारों ने सेन्थी, बापुनगर, पंचवटी, प्रताप नगर, सर्किट हाउस, रेल्वे ओवर ब्रिज, कलेक्टरी चोराहा, शास्त्री नगर चोराहा, सिंचाई नगर, सिटी काजवे रोड, सब्जी मंडी, गोल प्याऊ, सुभाष चौक, ओछरी गेट, गांधी नगर सेक्टर 1 से 5 नई पूलिया, रेल्वे स्टेशन सहित प्रमुख गली-चौराहों पर यज्ञ में भाग लेने के लिए निमंत्रण दिया।

कन्या कौशल शिविर एवं 24 कुण्डीय यज्ञ

लोहारा, यवतमाल। महाराष्ट्र

गायत्री परिवार यवतमाल द्वारा आयोजित श्री विश्वमाता गायत्री शक्तिपीठ, लोहारा, यवतमाल में तीन दिवसीय (31 जनवरी से 2 फरवरी 2025) देवकन्या कौशल समूह साधना शिविर व 24 कुण्डीय गायत्री महायज्ञ कार्यक्रम अनेक उपलब्धियों के साथ सम्पन्न हुआ। इस बहु-उद्देश्यीय कार्यक्रम में 340 से अधिक देव कन्याओं ने व्यक्तित्व निर्माण संबंधित प्रशिक्षण लिया। 24 कुण्डीय गायत्री महायज्ञ में लगभग 2000 श्रद्धालु, पालकों, शिक्षकों, विभिन्न सामाजिक संगठन संचालकों की भागीदारी रही। चंद्रपुर, बुलढाणा, अमरावती व अन्य निकटस्थ जिलों के परिजनों ने इसमें भाग लिया। समाजोपयोगी आयोजन करने हेतु गायत्री परिवार को निमंत्रण दिया गया।

युग निर्माण आन्दोलन के प्रति समर्पित हुई 340 देव कन्याएँ

प्रमुख उपलब्धियाँ

- सभी प्रशिक्षु 340 कन्याओं ने गायत्री मंत्र की दीक्षा ली।
- कलश यात्रा का शुभारम्भ यवतमाल के विधायक श्री बाला साहेब मांगुळकर ने किया।
- अनेक ट्रस्ट-मण्डलों तथा संस्थाओं द्वारा उनके परिसरों में भी ऐसे ही कार्यक्रम आयोजित करने की माँग की

लालक्षेत्र के नाम से कुख्यात क्षेत्र में 5000 युवाओं की भागीदारी वाला विशाल सम्मेलन

झाझा, जमुई। बिहार

झाझा प्रखंड के बैजला गाँव में आदर्श युवा प्रकोष्ठ, बैजला द्वारा आयोजित बाल सह युवा जागृति समारोह में लगभग 5 हजार लोग शामिल हुए। 19 जनवरी 2025 को आयोजित इस वार्षिक समारोह में 'दिया' दिल्ली के समन्वयक मनीष कुमार सिंह, पटना के प्रसिद्ध शिक्षक गुरु रहमान और जिला के अनुमंडल पदाधिकारी अभय कुमार तिवारी ने युवाओं का मार्गदर्शन किया।

मनीष कुमार सिंह ने युवाओं को जीवन में उत्कृष्टता का वरण करने के लिए भौतिकता के साथ अध्यात्म के समावेश पर बल दिया। व्यक्तित्व को ऊँचा उठाने में गायत्री मंत्र के विशिष्ट प्रभाव की चर्चा की। उन्होंने इसे महामानव बनाने वाला महामंत्र बताया और युवाओं को कलाम, राजेंद्र प्रसाद और विवेकानंद जैसे महापुरुषों से प्रेरणा लेने तथा सोशल मीडिया के भ्रमजाल से बचने का आह्वान किया।

गुरु रहमान ने सनातन धर्म को मनुष्यता, भाईचारे और वसुधैव कुटुंबकम की भावना से जोड़ा। अभय कुमार तिवारी ने जीवन में विपरीत परिस्थितियों में धैर्य रखने और संघर्ष के माध्यम से सफलता प्राप्त करने का संदेश दिया।

कार्यक्रम में बाल संस्कार शाला के बच्चों ने बिहार के महापुरुषों और छठ पूजा जैसे पर्वों की सांस्कृतिक झांकी प्रस्तुत की। उन्होंने योग और मनोरंजन से संबंधित नुक्कड़ नाटक भी प्रस्तुत किए।

इस कार्यक्रम को सफल बनाने में अभय नाथ तिवारी, गौतम भारद्वाज, ज्ञानप्रकाश, मनीष कुमार, नीतीश कुमार प्रिंस, विशाल, राकेश, सोनू, पिंटू, नीतीश कुमार सूर्य और युवा प्रकोष्ठ के सभी सदस्यों का योगदान रहा।

गायत्री परिवार की सक्रियता

आदर्श युवा प्रकोष्ठ प्रभारी आशीष कुमार ने कभी लाल क्षेत्र के नाम से कुख्यात रहे इस क्षेत्र में युवाओं के जीवन को बदलने और इस विशाल कार्यक्रम के आयोजन को बहुत बड़ी सफलता बताया। उन्होंने कहा कि यह सफलता आदर्श युवा प्रकोष्ठ द्वारा विगत 6 वर्षों से चलाए जा रहे कार्यक्रमों का सत्परिणाम है। शराब अड्डा के रूप में कुख्यात पचरुखी में युवा प्रकोष्ठ द्वारा 6 बाल संस्कार शालाएँ चलाई जा रही हैं।

युवा सक्रियता ने बदल दिया वातावरण

पचरुखी शराब के अड्डों के लिए कुख्यात था। वहाँ युवा प्रकोष्ठ ने पिछले छः वर्षों में अथक परिश्रम किया, जिसके परिणाम स्वरूप वातावरण बदला। आज वहाँ 6 बाल संस्कार शालाएँ चल रही हैं।

दीप प्रज्वलन कर सम्मेलन का उद्घाटन करते मनीष कुमार एवं साथी

नारी शक्ति संवर्धन 24 कुंडीय गायत्री महायज्ञ

सक्रियता का नया अध्याय आरंभ हुआ

सरायकेला-खरसावाँ। झारखंड

खरसावां प्रखंड में 28 से 31 जनवरी तक आयोजित नारी शक्ति संवर्धन 24 कुंडीय गायत्री महायज्ञ का सफल आयोजन हुआ। शान्तिकुञ्ज से आई श्री राजकुमार भृगु की टोली ने यज्ञ सम्पन्न कराया।

यह महायज्ञ विगत दशकों से क्षेत्र में छाई शिथिलता को दूर करने में सफल रहा। 25 दीक्षा संस्कार हुए। गृहे-गृहे यज्ञ, देवस्थापना, दीपयज्ञ, साहित्य वितरण, बाल संस्कारशाला संचालन और और संस्कार परंपरा के पुनर्जीवन के संकल्प लिए गए। महिला मंडल की बहिनों की सक्रिय भागीदारी ने कार्यक्रम को सफल बनाया, जिसमें प्रमुख रूप से श्रीमती शारदा गुप्ता, श्रीमती राखी साहू और श्रीमती बसंती महतो का प्रमुख योगदान रहा।

वनवासी विद्यार्थियों को दिये परीक्षा में सफलता के सूत्र एवं शुभकामनाएँ

11 कुण्डीय गायत्री महायज्ञ

श्री विजया पुरम। अंडमान निकोबार

अण्डमान और निकोबार द्वीप समूह के श्री विजया पुरम में त्रिपदा श्रद्धा महिला मंडल द्वारा 9.2.25 रविवार को 11 कुण्डीय गायत्री महायज्ञ का एक विशेष कार्यक्रम आयोजित हुआ। इस महायज्ञ में वनवासी परिजनों के बच्चों को आने वाली परीक्षाओं हेतु आत्मविश्वास एवं मनोबल बढ़ाने तथा उन्हें बेहतर सफलता के सूत्र एवं शुभकामनाएँ प्रदान की गईं।

यज्ञ में लगभग 150 बच्चों और उनके अभिभावकों ने भाग लिया। मंच संचालन श्री राजा राम जी, श्रद्धा महिला मंडल प्रमुख सत्यवती जी, लता जी एवं बाल संस्कार शाला के 5 बच्चों ने किया। इस महायज्ञ को संपन्न कराने में गायत्री परिवार के कार्यकर्त्ता मीना जी, शिव मोहन जी, कलादीं जी, कोकिला जी, सुशीला जी एवं वनवासी बहिनें पूनम, चंपा, सुमारी, पिंकी एवं भाई विष्णु, गंगा जी का विशेष योगदान रहा। प्रसाद के रूप में पाक्षिक प्रज्ञा अभियान, पॉकेट बुक्स एवं नशा मुक्ति के स्टिकर दिये गए।

विद्यार्थियों को अपनी संस्कृति से जोड़ा

टिहरी। उत्तराखण्ड : राजकीय इण्टर कॉलेज मरोड़ा, सकलाना में विशाल गायत्री यज्ञ सम्पन्न हुआ। सभी विद्यार्थियों ने इसमें भाग लेते हुए क्षेत्र, प्रदेश, देश और जन-जन की सुख-समृद्धि, दुःखों के निवारण और प्रकृति की खुशहाली के लिए विशेष प्रार्थना की।

गायत्री परिवार के पुरोहित कृष्ण भूषण पेटवाल, मूर्ति सिंह नेगी, सुरेंद्र हटवाल, महावीर धनोला, अनूप थपलियाल और एनएसएस कार्यक्रम अधिकारी डॉ. त्रिलोक चंद्र सोनी ने बच्चों को पाश्चात्य संस्कृति के प्रभाव से मुक्त होकर अपने प्रदेश एवं देश की महान संस्कृति से जुड़ने की प्रेरणा दी।

महिला सशक्तिकरण पर जागरूकता अभियान

अलवर। राजस्थान

गायत्री परिवार, लघु उद्योग महिला इकाई और देवेश फाउंडेशन के संयुक्त प्रयास से गायत्री मंदिर में महिलाओं के सशक्तीकरण और जागरूकता के लिए एक विशेष आयोजन आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम में आर.आर. सोनी ने सेबी की विभिन्न योजनाओं की जानकारी प्रदान की। शिवानी शर्मा ने महिलाओं को प्रधानमंत्री विश्वकर्मा योजना और धाति क्रिया समर्थ योजना के बारे में अवगत कराया, जिसमें 50 दिनों के निःशुल्क कोर्स का भी प्रावधान है। इन योजनाओं का उद्देश्य महिलाओं को आर्थिक रूप से सशक्त बनाना और उन्हें आत्मनिर्भर बनाना है। इस कार्यक्रम में डॉ. सरोज गुप्ता और गायत्री परिवार के अन्य सदस्य उपस्थित रहे।

बड़ी संख्या में संस्कार और सांस्कृतिक कार्यक्रम हुए

नागपुर। महाराष्ट्र : 1 से 4 फरवरी 2025 तक दक्षिण नागपुर में आयोजित भव्य 24 कुण्डीय गायत्री महायज्ञ और श्रीमद् प्रज्ञा पुराण का आयोजन सफलतापूर्वक संपन्न हुआ। महायज्ञ के प्रमुख संस्कारों में 700 बच्चों का विद्यारंभ संस्कार, 21 माताओं का पुंसवन संस्कार और 80 व्यक्तियों का दीक्षा संस्कार प्रमुख रहे। सांस्कृतिक कार्यक्रम भी आयोजित हुए, जिनमें संस्कारशालाओं के बच्चों ने योग, ध्यान, नाटक, नृत्य और गीतों के माध्यम से स्वास्थ्य, शिक्षा, पर्यावरण संरक्षण, महिला जागरण, स्वावलंबन और व्यसन मुक्ति के संदेश दिए।

क्षेत्रीय संत, विद्वान और समाजसेवियों ने उपस्थित होकर इस महायज्ञ की गरिमा बढ़ायी। इस भव्य आयोजन में समाज के सभी वर्गों ने सहभागिता की और एकता, भाईचारे और परस्पर सहयोग का उदाहरण प्रस्तुत किया।

शुद्ध बुद्धि से किए गए स्वार्थहीन काम यज्ञ कहलाते हैं। - लोकमान्य तिलक

भारतीय संस्कृति ज्ञान परीक्षा-2024 के पुरस्कार वितरण एवं सम्मान समारोह

प्रधानाचार्य और परीक्षा समन्वयक भी सम्मानित किए गए

बायें साक्षरता निकेतन में आयोजित समारोह में पुरस्कार प्रदान करते शान्तिकुञ्ज प्रतिनिधि श्री के.पी. दुबे जी तथा दायें बाबा साहब भीमराव अंबेडकर केन्द्रीय विश्वविद्यालय में प्रमाणपत्र प्रदान करते श्री अरुण श्रीवास्तव जी

लखनऊ। उत्तरप्रदेश

28 जनवरी 2025 को लखनऊ के साक्षरता निकेतन, सरोजनी नगर में भारतीय संस्कृति ज्ञान परीक्षा सम्मान समारोह का आयोजन किया गया। इसमें परीक्षा में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाने वाले विद्यालयों के प्रधानाचार्यों, परीक्षा समन्वयकों और मेरिट सूची में आए विद्यार्थियों को सम्मानित किया गया। शान्तिकुञ्ज प्रतिनिधि श्री के.पी.दुबे और उत्तरप्रदेश GEM पोर्टल के CEO श्री कृष्ण मुरारी जी ने उन्हें मेडल और स्मृतिचिन्ह प्रदान कर सम्मानित किया।

शान्तिकुञ्ज प्रतिनिधि ने अपने उद्बोधन में भारतीय संस्कृति के गौरवपूर्ण इतिहास और परीक्षा के उद्देश्य पर प्रकाश डालते हुए बताया कि 2024 में यह परीक्षा भारत के एक लाख से अधिक विद्यालयों में आयोजित की गई थी, जिसमें 42 लाख से अधिक विद्यार्थियों ने सहभागिता की।

समारोह में 300 से अधिक विद्यार्थी, प्रधानाचार्य और समन्वयक उपस्थित थे। श्री अरुण श्रीवास्तव ने कार्यक्रम का संचालन किया। गायत्री परिवार लखनऊ के समन्वयक श्री अतुल सिंह, श्री अनिल तिवारी, श्री महिपाल, डॉ. एस एन सचान सहित कई प्रमुख व्यक्तित्वों ने इसमें भाग लिया।

बाबा साहब भीमराव अंबेडकर केन्द्रीय विश्वविद्यालय में

लखनऊ। उत्तरप्रदेश

30 जनवरी 2025 को बाबा साहब भीमराव अंबेडकर केन्द्रीय विश्वविद्यालय, लखनऊ के प्रेक्षागृह में भारतीय संस्कृति ज्ञान परीक्षा सम्मान समारोह सम्पन्न हुआ। इस समारोह में परीक्षा में 2024 में सम्मिलित होने वाले सभी विद्यार्थियों को सहभागिता प्रमाणपत्र व मेरिट सूची में स्थान पाने वाले सर्वश्रेष्ठ तीन विद्यार्थियों को मेडल देकर तथा परीक्षा संपन्न कराने वाले आचार्यों को प्रशस्ति पत्र देकर सम्मानित किया गया। 150 से अधिक विद्यार्थियों की उपस्थिति रही।

समारोह के मुख्य वक्ता श्री अरुण श्रीवास्तव थे। योगा व नेचुरोपैथी विभाग के आचार्य डॉ. दीपेश्वर सिंह ने मानव जीवन के उत्थान में गायत्री परिवार की भूमिका व प्रयास की प्रशंसा करते हुए अपने विभाग में यज्ञ पर शोध कार्य को प्रोत्साहित करने का संकल्प प्रकट किया। भौतिक विज्ञान के डीन प्रोफेसर बी.सी. यादव ने आगामी वर्ष में और अधिक विद्यार्थियों को इस परीक्षा में भाग लेने के लिए प्रोत्साहित किया।

करनाल जिले में 27 विद्यालयों के 5600 विद्यार्थी शामिल हुए

करनाल। हरियाणा

दिनांक 1 फरवरी 2025 को गायत्री चेतना केंद्र, करनाल (हरियाणा) में भारतीय संस्कृति ज्ञान परीक्षा पुरस्कार वितरण एवं सम्मान समारोह का भव्य कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। इस कार्यक्रम में परीक्षा में भाग लेने वाले विद्यालयों की प्रबंधक कमेटी के सदस्यों तथा विजेता छात्र-छात्राओं को पुरस्कृत किया गया। भारतीय संस्कृति ज्ञान परीक्षा जिला करनाल के संयोजक श्री सतीश गौतम ने इस अवसर पर जानकारी दी कि करनाल जिले के 27 विद्यालयों से 5600 विद्यार्थियों ने इस प्रतियोगिता में हिस्सा लिया।

समारोह के मुख्य अतिथि थे डॉ. सुधीर जायसवाल, कमिश्नर इपीएफ ऑफिस और डॉ. पंकज सारस्वत, कृषि वैज्ञानिक अनुसंधान संस्थान। उन्होंने बड़े प्रेरणाप्रद शब्दों में बच्चों को परम पूज्य गुरुदेव का साहित्य पढ़ने की प्रेरणा दी।

कार्यक्रम की अध्यक्षता जिला संयोजक श्री सतीश गौतम ने की। उन्होंने इस अवसर पर भारतीय संस्कृति ज्ञान परीक्षा का उद्देश्य समझाते हुए बच्चों को भारतीय संस्कृति के आदर्शवादी सिद्धांतों को जीवन में अपनाने के लिए प्रेरित किया। इस परीक्षा के आयोजन में सर्वश्री महेंद्र धवन, संदीप गौतम, बलबीर जी, प्रदीप भारद्वाज, लखन लाल जी, डॉ. कंवरपाल शर्मा, श्री राजेंद्र शर्मा और श्री महेंद्र सिंह का सहयोग रहा।

दिवंगत देवात्माओं को भावभरी श्रद्धाञ्जलि

श्री वशिष्ठ कांत दीपक
गिरीडीह। झारखण्ड

गुरुदेव के साहित्य के प्रति अनन्य निष्ठा और समर्पण का भाव रखने वाले गायत्री चरणपीठ बगोदर के सक्रिय कार्यकर्त्ता श्री वशिष्ठ कांत दीपक का 14 जनवरी को निधन हो गया। अपनी 30 वर्ष की अल्प आयु में उन्होंने अखण्ड ज्योति एवं प्रज्ञा अभियान तथा युग साहित्य के माध्यम से अनेक लोगों को मिशन से जोड़ा।

श्री नरेन्द्र कुमार वार्ष्णेय
बबराला, संभल। उत्तर प्रदेश

बबराला निवासी, विनम्र स्वभाव के कर्मठ कार्यकर्त्ता श्री नरेन्द्र कुमार वार्ष्णेय का दिनांक 18 जनवरी 2025 को परलोक गमन हो गया। गायत्री शक्तिपीठ बबराला के निर्माण में उनका विशेष योगदान था।

श्रीमती सरोज शर्मा, जबलपुर। म.प्र.

अपनी जीवन साधना से प्रेरित कर अनेक लोगों को मिशन में जोड़ने वाली 68 वर्षीया श्रीमती सरोज शर्मा दिनांक 12 फरवरी को स्थूल देह त्यागकर अपनी पावन गुरुसत्ता की सूक्ष्म चेतना में विलीन हो गईं।

श्रीमती राधा देवी, रामगढ़। झारखण्ड

रामगढ़ क्षेत्र में श्री हरिहर साहू गायत्री परिवार की नींव के पत्थर माने जाते हैं। उनके साथ पूरे समर्पण भाव के साथ गुरुकार्यों में संलग्न रहने वाली उनकी 70 वर्षीया धर्मपत्नी श्रीमती धारा देवी का 9 फरवरी को देहावसान हो गया। वे बहिनों एवं युवापीढ़ी को मिशन से जोड़ने के लिए सतत सक्रिय रहती थीं। उनकी चार बेटियाँ हैं और चारों मिशन के कार्यों में पूरी निष्ठा और सक्रियता के साथ जुड़ी है।

111 घरों में यज्ञ हुए, 500 लोगों ने भाग लिया

जन्मशताब्दी वर्ष-2026 तक हर पूर्णिमा को ऑनलाइन होगा सामूहिक यज्ञ

जयपुर। राजस्थान

माघ पूर्णिमा के पावन अवसर पर गायत्री परिवार की विभिन्न शाखाओं द्वारा जयपुर के 111 घरों में एक ही दिन, एक समय पर गायत्री यज्ञ सम्पन्न कराए गए। इन यज्ञों में 500 से अधिक श्रद्धालुओं कुम्भ की तीर्थ चेतना में भाव स्नान के विचार एवं संकल्प के साथ भाग लिया।

इस कार्यक्रम के साथ राजस्थान के विभिन्न जिलों के परिजन और अमेरिका में रह रहे प्रदेश के लोग भी जुड़े थे। सबने मिलकर गायत्री महामंत्र और महामृत्युंजय मंत्र से आहुतियाँ देते हुए जीवन को आत्मकल्याण एवं लोकमंगल के पथ पर अग्रसर करने की प्रार्थना की।

यज्ञ को राजस्थान जोन प्रभारी शान्तिकुञ्ज प्रतिनिधि श्री गौरीशंकर सैनी एवं नारी जागरण अभियान समन्वयक शान्तिकुञ्ज प्रतिनिधि श्रीमती शालिनी वैष्णव ने भी संबोधित किया। राजस्थान जोन समन्वयक श्री ओमप्रकाश अग्रवाल ने वसंत पंचमी-2026 तक प्रत्येक पूर्णिमा को इस प्रकार के ऑनलाइन यज्ञ आयोजित कर इनमें अधिक से अधिक संख्या में परिजनों को शामिल कराने की घोषणा की। यज्ञ संचालन गायत्री चेतना केन्द्र दुर्गापुरा से किया गया।

251 कुण्डीय महायज्ञ का प्रयाज

देव कन्याओं ने निकाली मशाल यात्रा
घर-घर जनसंपर्क-आमंत्रण अभियान चलाया

अमेठी। उत्तरप्रदेश

18 से 22 मार्च तक अमेठी में राष्ट्र जागरण 251 कुण्डीय गायत्री महायज्ञ का विराट आयोजन होने जा रहा है। खण्डवा, मध्यप्रदेश से आई 27 देवकन्याओं की टोली ने इस यज्ञ के प्रयाज में फरवरी माह में विशेष भूमिका निभाई। कुमारी पूर्णिमा पंवार के नेतृत्व में गायत्री शक्तिपीठ अमेठी से मशाल यात्रा निकाली गई, जो अंबेडकर चौराहा, हनुमान गढ़ी चौक, गुड़ मंडी, पुरानी सब्जी मंडी, ककवा रोड, गांधी चौक, राजर्षि तिराहा, राम लीला मैदान, दुर्गापुर रोड़, ब्लाक तिराहा होते हुए गायत्री शक्तिपीठ पर समाप्त हुई। यात्रा में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के विभाग प्रचारक ओम प्रकाश जी, जिला प्रचारक पवन जी, डॉ. त्रिवेणी सिंह, डॉ. प्रवीण कुमार सिंह सहित सैकड़ों लोग शामिल हुए।

यह बालिकाएँ घर-घर जनसंपर्क का क्रान्तिकारी अभियान चला रही हैं, जिसके माध्यम से यज्ञ के आमंत्रण के साथ यज्ञ की सफलता और स्वस्थ, समुन्नत समाज के निर्माण के लिए विशेष जप, तप, प्रार्थना, अनुष्ठान करने की प्रेरणा दे रही हैं।

बलि प्रथा बंद करने तथा नशामुक्त ग्राम बनाने का संकल्प लिया

मुलताई, बैतूल। मध्यप्रदेश

ग्राम साड़िया में 27 जनवरी से 30 जनवरी तक पाँच कुंडीय गायत्री महायज्ञ एवं प्रज्ञा पुराण कथा का आयोजन हुआ। इसकी प्रेरणा से ग्रामीणों ने अपने गाँव में बलि प्रथा को समाप्त करने एवं नशामुक्त ग्राम बनाने का संकल्प लिया। कार्यक्रम में साड़िया सहित आसपास के सैकड़ों गाँवों के भाई-बहिनों ने भाग लिया।

छिंदवाड़ा से आई श्री पुरुषोत्तम बंदेवार की टोली ने प्रज्ञा पुराण कथा के माध्यम से पूज्यवर का मनुष्य में देवत्व के उदय और धरती पर स्वर्ग के अवतरण का संदेश दिया। गुरुदीक्षा संस्कार, पुंसवन संस्कार, मुंडन एवं विद्यारंभ आदि संस्कार भी निःशुल्क संपन्न कराए गए।

कार्यक्रम को सफल बनाने में सुरेश ठाकरे, यादोराव खाड़े, बाबूराव ठाकरे, मिट्ठू डोंगरे, अशोक ठाकरे, गुणवंत बरडे, प्रकाश ठाकरे, सुमित्रा, अनुसूया, सरिता ठाकरे, गायत्री परिवार ट्रस्ट मुलताई के मुख्य ट्रस्टी यादोराव निंबालकर एवं तहसील समन्वयक नारायण देशमुख का विशेष सहयोग रहा।

ग्राम सिरसावाड़ी को स्वच्छ और नशामुक्त बनाएँगे

इससे पूर्व ग्राम सिरसावाड़ी में पाँच कुंडीय गायत्री महायज्ञ एवं प्रज्ञा पुराण कथा का शानदार कार्यक्रम हुआ। इस महायज्ञ में 90 स्कूली बच्चों का निःशुल्क विद्यारंभ संस्कार संपन्न कराया गया। 55 भाई-बहनों ने गुरु दीक्षा ली और 5 बहिनों का पुंसवन संस्कार भी हुआ। कार्यक्रम की पूर्णाहुति पर ग्राम के युवाओं ने ग्राम स्वच्छता अभियान को निरंतर चलाने एवं ग्राम को नशामुक्त बनाने का संकल्प लिया।

108 कुण्डीय राष्ट्र जागरण गायत्री महायज्ञ

124 गाँवों की भागीदारी, 1000 दीक्षा संस्कार हुए

कुम्भराज, गुना। मध्यप्रदेश

कुम्भराज में दिनांक 8 से 12 जनवरी 25 तक राष्ट्र जागरण शक्ति संवर्धन हेतु 108 कुण्डीय गायत्री महायज्ञ का आयोजन किया गया। इसमें 124 गाँवों के परिवारों की भागीदारी रही। सभी गाँवों में घर-घर जाकर पीले चावल देकर ग्रामीणों को महायज्ञ में आमंत्रित किया गया। सभी 108 कुण्डों के लिये 108 गाँवों से यजमान को आमंत्रित किया गया था।

प्रथम दिन हजारों युग निर्माणी श्रद्धालुओं द्वारा निकाली गई भव्य कलश शोभायात्रा में सैकड़ों लोगों ने सद्ग्रंथ और वृक्ष काँवड़ धारण किये थे। यात्रा में नशा-कुरीति उन्मूलन एवं पौधारोपण जैसे रचनात्मक कार्यों की झाँकिया सजाई गई थी। इस आकर्षक शोभायात्रा का नगरवासियों ने पुष्प वर्षा कर जगह-जगह स्वागत किया।

कलश यात्रा में शामिल सद्ग्रंथ शोभायात्रा

संगीतमय कथा प्रवचन, नशामुक्ति प्रदर्शनी ने श्रद्धालुओं को बहुत प्रभावित किया। 1000 लोगों ने गायत्री महामंत्र की दीक्षा ली, 75 बहिनों के पुंसवन संस्कार सम्पन्न कराये गये। बड़ी संख्या में लोगों को नशा निवारण संकल्प कराये गये।

पाक्षिक प्रज्ञा अभियान के माध्यम से विचार क्रान्ति का शंखनाद

तेंदूखेड़ा, नरसिंहपुर। मध्यप्रदेश

जनशताब्दी वर्ष 2026 तक अखण्ड दीप के दिव्य प्रकाश और परम पूज्य गुरुदेव की विचार संजीवनी को तेंदूखेड़ा तहसील के प्रखंड इमलिया एवं काचरकोना के हर घर तक पहुँचाने का संकल्प स्थानीय कार्यकर्त्ताओं ने ले रखा है। इस कार्य में प्रज्ञा अभियान की विशिष्ट उपयोगिता को देखते हुए 7 जनवरी को एक विशेष गोष्ठी का आयोजन किया गया। इस गोष्ठी में 13 ग्रामों में प्रज्ञा अभियान के मध्यप्रदेश संस्करण को पहुँचाते हुए मिशन की गतिविधियों को गति देने के संकल्प लिए गए। गोष्ठी के उपरांत प्रथम 3 दिनों में ही इस शाखा ने प्रज्ञा अभियान के 225 सदस्य बना लिये हैं।

वसंत पर्व पर छाया ज्योति कलश यात्राओं का उल्लास

चेन्नई। तमिलनाडु

गायत्री चेतना केन्द्र, चेन्नई एवं स्थानीय गायत्री परिवार के परिजनों द्वारा परम पूज्य गुरुदेव के आध्यात्मिक जन्मदिन बसंत पंचमी, 02 फरवरी को ज्योति कलश का भव्य-पूजन किया गया। दीपयज्ञ के साथ आयोजित इस कार्यक्रम को शान्तिकुञ्ज प्रतिनिधि श्री रामचंद्र गायकवाड़ ने संबोधित किया। उन्होंने ज्योति कलश का महत्त्व एवं जन्मशताब्दी वर्ष से जुड़ी जिम्मेदारियों से परिजनों को अवगत कराया और उन जिम्मेदारियों के निर्वहन का संकल्प भी दिलाया।

कार्यक्रम में चेन्नई के प्रभारी श्री सत्यनारायण भूतड़ा, श्री राजेश अग्रवाल, दिया टीम के प्रभारी श्री गिरीश खंडेलवाल, सुश्री सुमन जी, सुश्री विनीता जी का सक्रिय सहयोग रहा। कार्यक्रम में युवा, स्कूली बच्चे, व्यापारी, मातृशक्ति एवं विशिष्ट जनों की उपस्थिति रही।

नाराकोडुरु। आंध्र प्रदेश

वसंत पर्व के पावन अवसर पर गायत्री शक्तिपीठ नाराकोडुरु में 9 कुंडीय गायत्री महायज्ञ के साथ ज्योति कलश पूजन का कार्यक्रम आयोजित किया गया। लगभग 500 श्रद्धालुओं ने इस महायज्ञ में भाग लेकर गायत्री परिवार के राष्ट्र चेतना जागरण के महान अभियान के प्रति अपनी श्रद्धांजलि अर्पित की।

कार्यक्रम का सफल संचालन पार्थसारथी जी, विक्रम जी, राधेकृष्ण जी और उनकी टीम द्वारा किया गया। उन्होंने गुण्टूर जिले में ज्योति कलश यात्रा की जानकारी दी, जिले में 108 कुंडीय गायत्री महायज्ञ आयोजन का संकल्प लिया गया।

बूंदी। राजस्थान

गायत्री शक्तिपीठ बूंदी में वसंत पर्व पर पंच कुंडीय यज्ञ एवं संस्कार का विशेष कार्यक्रम आयोजित किया गया। श्री विष्णु दत्त दाधीच एवं सहयोगी सुशीला ने यज्ञ संचालन करते हुए युग संदेश दिया। उन्होंने परम पूज्य गुरुदेव के बोध दिवस के अवसर पर उनके महान व्यक्तित्व की चर्चा करते हुए वसंत पर्व को जीवन में कलात्मकता, विद्या, गुण और संस्कार के संवर्धन का संकल्प पर्व बताया।

यह आयोजन जिले में निकलने वाली ज्योति कलश यात्राओं के प्रति लोगों को जागरूक करने की दृष्टि से बड़ा महत्त्वपूर्ण था। श्री रोडू लाल वर्मा एवं श्रीमती उषा शर्मा ने इस संदर्भ में विस्तृत जानकारी दी। मुख्य प्रबंधक सुरेश कुमार विजयवर्गीय ने वसंत पर्व की शुभकामनाएँ दीं। वसंत पर्व पर विद्यारंभ, कर्ण छेदन एवं पुंसवन संस्कार भी किए गए। कार्यक्रम के अंत में प्रसाद वितरण किया गया। कार्यक्रम में सभी परिजनों ने यज्ञ का लाभ प्राप्त किया।

गायत्री चेतना केन्द्र चेन्नई पर ज्योति कलश यात्रा का भव्य स्वागत, शानदार संकल्प उभरे

वीर बाल दिवस पर 51 कुण्डीय यज्ञ

बच्चों को दिए साहस और वीरता के संस्कार

बच्चों को सम्मानित करते शान्तिकुञ्ज प्रतिनिधि और यज्ञ करते बच्चे

नोएडा, गौतमबुद्ध नगर। उत्तरप्रदेश

हमारे देश में 26 दिसम्बर का दिन वीर बाल दिवस के रूप में मनाया जाता है। गायत्री परिवार की नोएडा शाखा ने सन् 2023 में 51 कुंडीय यज्ञ के साथ इसे मनाने की परम्परा आरंभ की थी, जिसके माध्यम से नन्हें बच्चों को अपनी महान संस्कृति से परिचित कराते हुए उन्हें साहसी, सेवाभावी और संस्कारवान बनाने के प्रयास किए जाते हैं।

दिनांक 26 दिसम्बर 2024 को सेक्टर-16सी स्थित महागुन मायवुड्स में 51 कुंडीय यज्ञ के साथ वीर बाल दिवस मनाया गया, जिसमें 80 से 85 नौनिहालों ने भाग लिया, सत्प्रेरणाओं को हृदयंगम करते हुए यज्ञाहुतियाँ दीं। यज्ञ संचालन कर रहे गायत्री चेतना केन्द्र नोएडा के व्यवस्थापक श्री बालरूप शर्मा जी ने इस अवसर पर बच्चों और अभिभावकों को भारतीय संस्कृति में यज्ञ का महत्त्व बताया और नियमित गायत्री उपासना व यज्ञ करते हुए जीवन को बेहतर बनाने का संदेश दिया।

राष्ट्रीय बालिका दिवस पर बालिकाओं का सम्मान

उदयपुरवाटी, झुंझुनू। राजस्थान

गायत्री परिवार की स्थानीय शाखा ने राष्ट्रीय बालिका दिवस के अवसर पर बालिकाओं का सम्मान समारोह आयोजित किया। सर्वोदय कार्यकर्ता श्री बद्री प्रसाद तंवर ने इस अवसर पर कहा कि बालिका ही समाज के सर्वांगीण विकास की पहली सीढ़ी है। इसीलिए भारतवर्ष में शक्ति की पूजा ईश्वरीय रूप में की जाती है। श्री बजरंग लाल सोनी ने कहा कि नारी शक्ति ही घर, परिवार और राष्ट्र में देवत्व का वातावरण स्थापित करती है।

समारोह के मुख्य अतिथि एडवोकेट मोतीलाल सैनी ने वर्तमान समय में महिला विकास की दिशा में किए जा रहे प्रयासों और विभिन्न क्षेत्रों में उनकी उपलब्धियों पर भी विस्तार से चर्चा की।

विद्यालय के निदेशक महेंद्र सैनी और प्रधानाचार्य सुनीता सैनी ने गायत्री परिवार के इस पुनीत कार्य के लिए आभार व्यक्त करते हुए सभी आगंतुकों का धन्यवाद ज्ञापित किया।

युगऋषि के महान व्यक्तित्व एवं युगधर्म का बोध कराते वसंत पर्व समारोह

महासमुंद। छत्तीसगढ़

बसंत पंचमी के पावन अवसर पर गायत्री शक्तिपीठ महासमुंद में पाँच कुंडीय गायत्री महायज्ञ का आयोजन किया गया। कई पालियों में लगभग 250 परिजनों एवं श्रद्धालुओं ने यज्ञ में भाग लिया। छोटे बच्चों के विद्यारंभ संस्कार, दीक्षा संस्कार, मुंडन संस्कार, जन्मदिन संस्कार, अन्नप्राशन संस्कार आदि निःशुल्क कराए गए। यज्ञ की पूर्णाहुति के पश्चात् माता सरस्वती के अवतरण दिवस एवं परम पूज्य गुरुदेव के आध्यात्मिक जन्मदिन दिवस के उपलक्ष्य में विशेष पूजन-प्रेरणा का क्रम सम्पन्न हुआ। विशिष्ट पूजन श्री बी.एन. गुप्ता, बी.के. गुप्ता, डॉक्टर शेषनारायण गुप्ता, भरत कन्नौजे द्वारा पूजन किया गया। इस अवसर पर श्री ललित मेश्राम ने पूज्य आचार्य जी के जीवन पर प्रकाश डालते हुए युग परिवर्तन के इस युगांतर आंदोलन में सहयोग करने हेतु परिजनों का आह्वान किया। यज्ञ से पूर्व प्रातः 5 से 8 बजे तक गायत्री महामंत्र जप की सामूहिक साधना रखी गई थी।

गोंडल, राजकोट। गुजरात

गायत्री परिवार गोंडल ने अपनी तहसील के मोविया गाँव में 24 घरों में गायत्री यज्ञ का आयोजन करते हुए परम पूज्य गुरुदेव के जन्मदिवस पर उन्हें श्रद्धाञ्जलि दी। गृहे-गृहे यज्ञ अभियान के लिए 7 टोलियाँ बनाई गई थीं। टोलियों के गाँव में पहुँचने पर गाँववासियों ने गाजे-बाजे के साथ स्वागत किया। घर-घर द्वार पर रंगोलियाँ सजाई गईं। जहाँ यज्ञ हुए उन परिवारों में देवस्थापनाएँ कराई गईं, कई संस्कार हुए। यज्ञ में भाग लेने वाले श्रद्धालुओं को युग साहित्य के स्वाध्याय, नित्य सूर्य अर्घ्यदान, बलिवैश्व यज्ञ, साहित्य वितरण आदि के संकल्प दिलाए गए।

भुज, कच्छ। गुजरात

गायत्री शक्तिपीठ भुज में परम पूज्य गुरुदेव के बोध दिवस के उपलक्ष्य में प्रातः यज्ञ और सायंकाल दीपयज्ञ का भव्य कार्यक्रम आयोजित किया गया था। इस कार्यक्रम में कक्षा 10 और 12 की बोर्ड की परीक्षाओं में शामिल हो रहे 92 विद्यार्थियों ने विशेष उत्साह के साथ भाग लिया। ऋद्धिबेन, पूजाबेन एवं वैशालीबेन ने दीपयज्ञ का संचालन करते हुए सभी विद्यार्थियों को मानव जीवन की गरिमा का बोध कराया और उनमें गुरुसत्ता के आशीर्वादों से बेहतर सफलता का आत्मविश्वास जगाया।

बोटाद। गुजरात में रक्तदान शिविर

गायत्री परिवार बोटाद ने परम पूज्य गुरुदेव के आध्यात्मिक जन्मदिवस वसंत पंचमी पर सेवाभाव दर्शाते हुए रक्तदान शिविर का आयोजन किया था, जिसमें सात लोगों ने रक्तदान किया।

माँ सरस्वती के अवतरण दिवस पर विद्यार्थियों में फैलाया जीवन विद्या का आलोक

दिल्ली। एनसीआर

दिया, दिल्ली ने वसंत पंचमी के पावन पर्व पर कई कार्यक्रम आयोजित किए। 1 फरवरी को 12 घंटे का अखण्ड जप रखा गया था। 2 फरवरी को सुमधुर प्रज्ञागीतों से युक्त सरस और प्रेरणाप्रद सरस्वती पूजन का कार्यक्रम हुआ। इसमें दिया, दिल्ली के संयोजक श्री मनीष जी ने युवाओं को वसंत पर्व का आध्यात्मिक महत्त्व बताते हुए उनकी शाखा द्वारा चलाई जा रही रचनात्मक गतिविधियों में भाग लेने की प्रेरणा दी।

श्री अखिलेश पांडेय जी (निदेशक, कोयला मंत्रालय, भारत सरकार) ने मन को साधने और आत्मानुशासन की महत्ता पर प्रकाश डाला। श्री धर्मेंद्र कुमार (निदेशक, पतंजलि, आईएएस) ने कर्मयोग व निष्काम कर्म की व्याख्या की।

दिया, दिल्ली द्वारा झुग्गी बस्तियों में चलाई जा रही बाल संस्कार शाला में भी प्रेरणाप्रद कार्यक्रम आयोजित किए गए।

दिल्ली, पुरई (दुर्ग) और विजयवाड़ा में आयोजित गायत्री यज्ञों में आहुतियाँ अर्पित करते विद्यार्थी

पुरई, दुर्ग। छत्तीसगढ़

दिव्य भारत युवा संघ छत्तीसगढ़ द्वारा पावन वसंत पंचमी 3 फरवरी 2025 को शासकीय हायर सेकेंडरी स्कूल पुरई, दुर्ग में 5 कुंडीय गायत्री महायज्ञ का आयोजन किया गया। इस अवसर पर डॉ. पी. एल. साव एवं श्रीमती अनीता साव ने अपने विद्यार्थियों को अपने विचार और व्यक्तित्व को निरंतर निखारते रहने के लिए गायत्री उपासना के अवलम्बन की प्रेरणा दी। उन्होंने कहा कि नियमित गायत्री मंत्र के जप, ध्यान व मंत्र लेखन से हमारी मानसिक शक्ति का विकास होता है। श्रीमती अंजना साहू ने बच्चों को यज्ञ का ज्ञान-विज्ञान समझाते हुए यज्ञ संपन्न कराया।

कार्यक्रम में शाला की प्राचार्या श्रीमती सीमा दवे, पूर्णिमा खोबरागड़े, पुष्पा साहू, महेंद्र साहू, पदमा साहरा, स्मृति गणवीर, भोनेश्वरी चंद्राकर, उमा साहू, विनोद सिन्हा, लहरे सर, वंदना गेडाम, अनीता पारखे, पूर्णिमा देवांगन, डॉ. योगेंद्र कुमार, कुमकुम साहू एवं इंजीनियर युगल किशोर उपस्थित थे।

विजयवाड़ा, आंध्र प्रदेश

विजयवाड़ा के ओल्ड टाउन में पंच कुंडी गायत्री यज्ञ के साथ मनाए गए वसंत पर्व में कक्षा नौ एवं दस के 140 विद्यार्थियों, चार विद्यालयों के 8 शिक्षकों तथा 70 कार्यकर्त्ताओं ने भाग लिया। विद्यार्थियों को गायत्री उपासना से आत्मिक, मानसिक और बौद्धिक क्षमताओं के विकास के विज्ञान की जानकारी दी। सभी विद्यार्थियों से गायत्री महामंत्र लेखन भी कराया गया। आगामी कार्यक्रमों की जानकारी भी दी गई।

फार्म-4

प्रकाशन का स्थान : हरिद्वार
प्रकाशन की अवधि : पाक्षिक
प्रकाशक का नाम : श्रीमती शैलबाला पण्ड्या
प्रकाशक का पता : श्रीरामपुरम, गायत्री नगर, शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार (उत्तराखण्ड)
क्या भारत का नागरिक है? : हाँ, भारतीय
मुद्रक का नाम : उत्तर भारत लाइव, एच.सी.एल. कम्पाउण्ड, सहारनपुर रोड़, निरंजनपुर, देहरादून-248001 (उत्तराखण्ड)
सम्पादक का नाम : प्रमोद शर्मा
सम्पादक का पता : शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार
क्या भारत का नागरिक है? : हाँ, भारतीय
उन व्यक्तियों के नाम व पते, जो समाचार पत्र के स्वामी हों तथा जो समस्त पूँजी के एक प्रतिशत से अधिक के साझीदार हों। श्री वेदमाता गायत्री ट्रस्ट (टी.एम.डी.), शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार, उत्तराखण्ड

मैं श्रीमती शैलबाला पण्ड्या एतद्द्वारा घोषित करती हूँ कि मेरी अधिकतम जानकारी एवं विश्वास के आधार पर उपरोक्त विवरण सत्य है।

दिनांक-01.3.2025 प्रकाशक का हस्ताक्षर
श्रीमती शैलबाला पण्ड्या

पति-पत्नी ऐसा व्यवहार करें, जिससे उनकी आपसी आशंका एवं उद्वेग नष्ट हो जाएँ। इससे गृहस्थाश्रम में ही स्वर्गीय सुख की अनुभूति होती है। - साने गुरुजी

शान्तिकुञ्ज प्रतिनिधि का यूरोप प्रवास

विशिष्ट विभूतियों के साथ पूज्य गुरुदेव के अध्यात्म-दर्शन के विस्तार और युग परिवर्तन के मिशन पर चर्चा हुई

अखिल विश्व गायत्री परिवार के युवा युगनायक आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी विश्व के मनीषियों के बीच एक विशिष्ट विभूति बनकर उभरे हैं। वे युगशक्ति गायत्री और वैज्ञानिक अध्यात्मवाद पर आधारित युगऋषि पं. श्रीराम शर्मा आचार्य जी के युग परिवर्तन के मिशन और मानवमात्र के उज्ज्वल भविष्य के दर्शन को अनेक वैश्विक मंचों पर पहुँचाने में सफल हुए हैं। उनका फरवरी 2025 का यूरोप प्रवास इस दिशा में अनेक महत्त्वपूर्ण उपलब्धियों से परिपूर्ण रहा।

लुइस फ्रेंचेसी, राष्ट्रमंडल के उप महासचिव

लुइस फ्रेंचेसी (दायीं ओर)

देव संस्कृति विश्वविद्यालय के प्रति कुलपति आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी ने लंदन में राष्ट्रमंडल के उप महासचिव लुइस फ्रेंचेसी से मुलाकात की। दोनों की बीच एक उज्ज्वल और अधिक समावेशी भविष्य को आकार देने संबंधी विचारों का आदान-प्रदान हुआ।

यह वार्ता विभिन्न राष्ट्रों के बीच संबंधों को मजबूत करने और सहयोग बढ़ाने जैसे विषयों पर केन्द्रित थी। वार्ता में पूज्य गुरुदेव के दृष्टिकोण के आधार पर वैश्विक एकता और सामूहिक प्रगति के मूल्यों को बढ़ावा देने की प्रतिबद्धता झलकती रही। मानवमात्र के वैचारिक उत्थान के साथ आध्यात्मिकता, सहयोग, वैश्विक सद्भाव के सतत विकास पर केन्द्रित दुनिया बनाने की आवश्यकता पर प्रकाश डाला गया।

श्री विजय गोयल, सिंघानिया एण्ड कंपनी में पार्टनर

विजय गोयल (बायीं ओर)

सिंघानिया एण्ड कंपनी के पार्टनर, इंडो-यूरोप बिजनेस फोरम के संस्थापक और एसोचैम यू.के. के चेयरमैन श्री विजय गोयल जी के साथ शान्तिकुञ्ज प्रतिनिधि की वार्ता हुई। इसमें वैश्विक एकता एवं सद्भाव बढ़ाने में परम पूज्य गुरुदेव एवं परम वंदनीया माताजी के लोकमंगलकारी गहन आध्यात्मिक दृष्टिकोण पर विस्तार से प्रकाश डाला गया।

डॉ. चिन्मय जी ने भारत-यू.के.-यूरोप के व्यापारिक संबंधों को मजबूत करने में श्री गोयल जी की महत्त्वपूर्ण भूमिका की सराहना की, साथ ही उन्होंने व्यापार और आध्यात्मिक मूल्यों के बीच संतुलन स्थापित करने पर भी चर्चा की। उन्होंने कहा कि जीवन में आध्यात्मिकता के समावेश से नैतिक मूल्यों की वृद्धि होती है, जो सबके लिए हितकारी है और संबंधों में स्थायित्व को बढ़ावा देती है।

देव संस्कृति विवि. के प्रति कुलपति आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी को मिला
रॉक्लॉ नगर का सर्वोच्च नागरिक सम्मान

रॉक्लॉ के मेयर मार्सिन विटको से सम्मान ग्रहण करते आदरणीय डॉ. चिन्मय जी, दायें उपस्थित अन्य गणमान्यों के साथ

रॉक्लॉ। पोलैण्ड

पोलैण्ड के रॉक्लॉ शहर में 11 फरवरी, 2025 को विश्व बीमार दिवस (वर्ल्ड डे ऑफ द सिक) के अवसर पर आयोजित एक ऐतिहासिक समारोह में देव संस्कृति विश्वविद्यालय के प्रति कुलपति आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी को अपना सर्वोच्च नागरिक सम्मान प्रदान किया। दूरदर्शी नेता, प्रकाशवान आध्यात्मिक व्यक्तित्व और उनके द्वारा मानवता के कल्याण के लिए वैश्विक स्तर पर किये जा रहे अद्वितीय योगदान के लिए उन्हें यह सम्मान प्रदान किया गया है।

इस समारोह में कई उच्च-स्तरीय गणमान्य व्यक्ति मौजूद थे, जिनमें टॉमसजो माजोविकी के मेयर मार्सिन विटको, रॉक्लॉ में भारतीय गणराज्य के मानद वाणिज्यदूत कार्तिकेय जोहरी और सेंट क्रिस्टोफर फाउंडेशन के अध्यक्ष फादर क्रिज्सटॉफ किलबोविक्ज शामिल थे। ब्रोकला में धर्मशास्त्र के पोंटिफिकल संकाय के पूर्व रेक्टर और डॉ. चिन्मय जी के सबसे बड़े समर्थकों में से एक फादर आंद्रेज टॉमको ने उन्हें इस प्रतिष्ठित पुरस्कार के लिए नामांकित करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई।

इस अति विशिष्ट सम्मान को आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी ने अपनी गुरुसत्ता को समर्पित किया। उन्होंने कहा कि इस सम्मान पर अखिल विश्व गायत्री परिवार के उन करोड़ों परिजनों का समान अधिकार है, जो पूज्य गुरुदेव की शिक्षाओं को अपने जीवन में गहराई से आत्मसात करते हैं। जिन्हें गुरुदेव-माताजी व्यक्ति, समाज, राष्ट्र जैसे भेदभाव से ऊपर उठकर मानवता की भलाई के लिए काम करने के लिए प्रेरित करते हैं।

आदरणीय डॉ. चिन्मय जी ने कहा कि इस सम्मान से उनकी जिम्मेदारियाँ और बढ़ गयी हैं। वे अपने मिशन के प्रति और अधिक समर्पित होंगे। इस प्रकार के सम्मान न केवल सम्मानित व्यक्ति के लिए, बल्कि समाज और मानवता के लिए भी प्रेरणा का स्रोत होते हैं।

प्रतिष्ठित विश्वविद्यालयों के संग शिक्षा-सहयोग पर चर्चा हुई

डेब्रेसेन विश्वविद्यालय, हंगरी

विश्व के अनेक देशों की उच्च शैक्षणिक संस्थाओं के साथ देव संस्कृति विश्वविद्यालय के संबंधों को प्रगाढ़ कर निरंतर भारतीय संस्कृति की प्रतिष्ठा बढ़ा रहे आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी की हंगरी के सबसे पुराने और सुप्रसिद्ध डेब्रेसेन विश्वविद्यालय के वाइस रेक्टर से

आदरणीय डॉ. चिन्मय जी बायें डेब्रेसेन विवि. के वाइस रेक्टर के साथ और दायें कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय के प्रोफेसर डेविड फोर्ड के साथ

भेंट हुई। सैकड़ों स्नातक या स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम चला रहे इस विश्वविद्यालय में भारतीय सांस्कृतिक और आध्यात्मिक कार्यक्रमों को आरंभ करने की संभावनाओं के संबंध में विचार-विमर्श हुआ।

दोनों विश्वविद्यालयों के सहयोग से ऐसे पाठ्यक्रम आरंभ करने पर चर्चा हुई, जो विश्व-मानवता को सन्मार्ग की ओर प्रेरित करने वाले परम पूज्य गुरुदेव के विचारों की बुनियाद पर युवा पीढ़ी में नवचेतना का जागरण कर सके। यह प्रयास दोनों देशों के बीच शैक्षिक-सांस्कृतिक संबंधों को सुदृढ़ करने में सेतु बन सके।

कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय, इंग्लैण्ड

कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय में धर्मशास्त्र के प्रोफेसर डेविड फोर्ड के साथ बातचीत करने का अवसर मिला। उनके साथ आस्था, दर्शन और शैक्षिक अन्वेषण पर गहन विचार-विमर्श हुआ। इस वार्ता ने कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय और देव संस्कृति विश्वविद्यालय के बीच सतत आध्यात्मिक संवाद का सेतु स्थापित किया है। शैक्षणिक और दार्शनिक परिदृश्य में आध्यात्मिक दृष्टिकोण को सारे विश्व में बढ़ावा देने के उपायों को साझा करने पर जोर दिया गया।

रीगा, लातविया में हुआ ज्योति कलश यात्रा यज्ञ

लिथुआनिया में भी पहुँचेगा अखण्ड ज्योति का दिव्य आलोक

राजधानी रीगा में गायत्री यज्ञ में भाग ले रहे मूल निवासी

रीगा। लातविया

रीगा में नवगठित गायत्री परिवार के सदस्य बाल्टिक देश लातविया और भारत की सांस्कृतिक, आध्यात्मिक समरूपता को उकेरते हुए दोनों देशों के संबंधों को सुदृढ़ करने की दिशा में प्रबल सेतु का काम कर रहे हैं। देव संस्कृति विश्वविद्यालय, शान्तिकुञ्ज में स्थापित एशिया का पहला और दुनिया का सबसे बड़ा बाल्टिक संस्कृति और अध्ययन केंद्र इस दिशा में बड़ी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। इन सत्प्रयासों के प्रेरक, मार्गदर्शक की भूमिका देव संस्कृति विश्वविद्यालय के प्रति कुलपति आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी ने निभाई है।

डॉ. चिन्मय जी अपने प्रस्तुत यूरोप प्रवास में रीगा पहुँचे। अखण्ड दीप एवं परम वंदनीया माताजी की जन्मशताब्दी के उपलक्ष्य में उनकी उपस्थिति में प्रथम बार गायत्री परिवार लातविया द्वारा ज्योति कलश यात्रा यज्ञ का आयोजन किया गया। लातवियाई मूल के 100 से अधिक सदस्यों ने इसमें भाग लिया। वे ज्योति कलश को देवस्थापना के साथ अपने-अपने घरों में ले गए और नियमित गायत्री उपासना, साधना और आराधना करने का संकल्प लिया।

3 डिग्री सेल्सियस की भीषण ठंड में भी बड़ी संख्या में साधकों की उपस्थिति ने युगशक्ति गायत्री के प्रति दृढ़ निष्ठा और भक्तिभावना के दर्शन कराए।

यह दिव्य ज्योति कलश इस युग की जाग्रत् आत्माओं को दिव्यता का अनुदान देने लिथुआनिया में भी पहुँचेगा, जहाँ यज्ञ और देवस्थापना समारोहों की एक श्रृंखला आयोजित की जाएगी।

ब्रिटिश संसद में गूँजा गायत्री महामंत्र

(...पृष्ठ 1 से आगे)

शान्तिकुञ्ज प्रतिनिधि ने यू.के. की संसद में 'भारतीय ज्ञान के माध्यम से सतत शांति' विषय पर अपने विचार प्रस्तुत किये। यह बड़ा अद्भुत और आध्यात्मिक दृष्टि से अत्यंत महत्त्वपूर्ण अवसर था, जब पहली बार ऐतिहासिक संसद भवन की दीवारें माँ गायत्री के पवित्र मंत्र की दिव्य वैदिक ध्वनियों से गुंजायमान हुईं। अपने संबोधन में शान्तिकुञ्ज प्रतिनिधि ने वैश्विक शांति, आध्यात्मिक सद्भाव और आने वाली पीढ़ियों के लिए एक बेहतर दुनिया को आकार देने हेतु मानवमात्र को एकजुट होने का आह्वान किया। उन्होंने समूह चेतना के विकास से वैश्विक परिवर्तन के संदर्भ में परम पूज्य गुरुदेव के दृष्टिकोण से विद्वत्सभा को अवगत कराया।

शान्तिकुञ्ज प्रतिनिधि को कई विशिष्ट अतिथियों का स्वागत करने का सम्मान मिला, जिनमें लॉर्ड कृष्ण रावल (ओबीई, निदेशक, एफआईएल, यूके), चर्च ऑफ इंग्लैंड के बिशप लुसा, कैनन सारा स्नाइडर (संस्थापक, रोज कैसल फाउंडेशन, यूके), श्री गैरेथ थॉमस (सांसद, हैरो वेस्ट, यूके), और श्री कनिष्का नारायण (सांसद, वेले ऑफ ग्लैमरगन, यूके) शामिल थे। डॉ. चिन्मय जी ने उन्हें परम पूज्य गुरुदेव की विचार संजीवनी का उपहार भेंट कर सम्मानित किया।

उद्बोधन से पूर्व संसद में देवस्थापना कर उसका वैदिक विधि-विधान से पूजन किया गया, 'सर्वे भवंतु सुखिनः' के भाव के साथ मानवमात्र के उज्ज्वल भविष्य की प्रार्थना की गई।

गायत्री चेतना केन्द्र में उल्लासपूर्वक मना वसंत पर्व

पूज्य गुरुदेव के विचारों के विस्तार की योजनाओं पर चर्चा हुई

लेस्टर। इंग्लैण्ड : यूरोप प्रवास पर पहुँचे आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी वसंत पंचमी के दिन सर्वप्रथम रैंडल रोड, लेस्टर स्थित 'गायत्री चेतना केन्द्र' में पहुँचे। वहाँ इंग्लैण्ड के कर्मठ कार्यकर्त्ताओं और श्रद्धालु स्वजनों के बीच वसंत पर्व बड़े हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। दीपयज्ञ के साथ मनाए गए इस समारोह में शान्तिकुञ्ज प्रतिनिधि ने बड़े मार्मिक संस्मरणों के साथ परम पूज्य गुरुदेव के विचार और उनकी आकांक्षाओं का स्मरण कराया। उन्होंने कहा कि अपने गुरु की भाँति अपने जीवन को लोकमंगल के लिए समर्पित कर देना, यही गुरुदेव को हमारी सच्ची श्रद्धाञ्जलि है।

आदरणीय डॉ. चिन्मय जी ने अपने संदेश में परम पूज्य गुरुदेव के वैज्ञानिक अध्यात्मवाद पर आधारित नवयुग की चेतना के वैश्विक विस्तार और विश्व मानवता की निःस्वार्थ भाव के साथ सेवा करने में गायत्री परिवार की भूमिका का प्रतिपादन किया। वर्तमान समय में मिशन की गतिविधियों और योजनाओं की जानकारी दी।

जन्मशताब्दी वर्ष-2026 के परिप्रेक्ष्य में यह उद्बोधन अत्यधिक प्रभावपूर्ण एवं मार्गदर्शक सिद्ध हुआ। उपस्थित गणमान्य परिजनों में युग परिवर्तन की इस विशिष्ट वेला में विशेष सक्रियता अपनाने के भाव और संकल्प उभरे। पूज्यवर के विचार और सिद्धांतों को अधिक व्यापक स्तर पर पहुँचाने की संभावनाओं पर भी चर्चा की गई।

कार्यक्रम में उपस्थित श्रद्धालुओं ने इस अवसर को शान्तिकुञ्ज के सान्निध्य की सहज अनुभूति, आत्मीयता और आत्मिक शांति प्रदान करने वाला बताया।

समाचार लिखे जाने तक आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी का यूरोप प्रवास जारी है। प्रवास के शेष समाचार अगले अंक में पढ़ें।

उत्तराखण्ड राज्य स्तरीय भारतीय संस्कृति ज्ञान परीक्षा पुरस्कार वितरण समारोह सम्पन्न

गायत्रीतीर्थ शान्तिकुञ्ज में सम्मानित किए गए 110 विद्यार्थी

गायत्रीतीर्थ शान्तिकुञ्ज में 9 फरवरी को उत्तराखण्ड राज्य का भारतीय संस्कृति ज्ञान परीक्षा पुरस्कार वितरण समारोह आयोजित हुआ। इसमें पूरे राज्य में कक्षा 5 से 12वीं और कॉलेज स्तर के हर वर्ग में प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय स्थान प्राप्त करने वाले 110 विद्यार्थियों को सम्मानित किया गया। सभी विद्यार्थियों को स्मृति चिह्न, प्रशस्ति पत्र व नगद राशि भेंटकर सम्मानित किया गया।

पुरस्कार विजेता विद्यार्थियों को सम्मानित करते बायें से क्रमशः उत्तराखण्ड राज्य समन्वयक श्री जयसिंह यादव, शान्तिकुञ्ज व्यवस्थापक श्री योगेन्द्र गिरि एवं श्री दिनेश मैखुरी

पुरस्कार ग्रहण करने हेतु शान्तिकुञ्ज पहुँचे सभी विद्यार्थियों ने श्रद्धेया शैल जीजी से मिलकर आशीर्वाद एवं मार्गदर्शन प्राप्त किया। स्नेहसलिला शैल जीजी ने कहा कि भारतीय संस्कृति ज्ञान परीक्षा बच्चों में अपनी संस्कृति के प्रति जागरूकता, नैतिकता और मानवीय मूल्यों के समावेश के लिए राष्ट्रीय स्तर पर किया जा रहा एक अत्यंत सफल प्रयास है।

सम्मान समारोह को शान्तिकुञ्ज के व्यवस्थापक श्री योगेन्द्र गिरी ने संबोधित किया। उन्होंने कहा कि इस परीक्षा का विद्यार्थियों के व्यक्तित्व पर गहरा प्रभाव देखा गया है। प्रो. भटनागर ने कहा कि हमारी सनातन परंपरा ने ही चाणक्य, छत्रपति शिवाजी, स्वामी विवेकानंद आदि महामानव गढ़े। श्री गंभीर सिंह फरसवान, श्री अचलेश अग्रवाल आदि ने भी अपने विचार रखे। इस अवसर पर उत्तराखण्ड के प्रांतीय संयोजक, जिला संयोजकों सहित राज्य भर से आये छात्र-छात्राएँ व उनके अभिभावक तथा शिक्षकगण उपस्थित रहे।

उत्तराखण्ड के सुदूरवर्ती गाँव में हुई आगजनी में बेघर हुए परिवारों को राहत सामग्री दी

उत्तरकाशी। उत्तराखण्ड

उत्तरकाशी जिले की मोरी तहसील के गाँव जखोल में आगजनी हुई। इसमें जन-धन की हानि हुई और कई परिवार बेघर हो गये थे। इस पीड़ादायक घटना से आहत श्रद्धेया शैल जीजी ने पीड़ितों की सहायता के लिए शान्तिकुञ्ज से आवश्यक राहत सामग्री लेकर एक दल घटना स्थल के लिए रवाना किया। देव संस्कृति विश्वविद्यालय के प्रति कुलपति आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी ने पीड़ितों को अपने परिवार का ही सदस्य बताया और स्नेह, संवेदना के मरहम के साथ आवश्यक साधन उन तक पहुँचाने के निर्देश दिये।

पीड़ित परिवारों को राहत सामग्री देते शान्तिकुञ्ज प्रतिनिधि

श्री मंगल सिंह गढ़वाल के नेतृत्व में सात सदस्यीय शान्तिकुञ्ज आपदा राहत दल 10 फरवरी को पीड़ितों की सहायता कर लौटा। उन्होंने बताया कि स्थानीय परिजनों के सहयोग से जरूरतमंद परिवारों को राशन, कपड़े, कंबल, बर्तन, तिरपाल सहित अन्य घरेलु उपयोग के सामान दिये गए। पीड़ित परिवार इस आघात से उबरें, इसके लिए सामूहिक प्रार्थना की गई, गायत्री उपासना से मनोबल बढ़ाने और सकारात्मक सोच के साथ जीवन की समस्याओं से उबरने की प्रेरणा दी।

देव संस्कृति विश्वविद्यालय के 'रबर बॉय रोहित' ने राष्ट्रीय खेल-2025 में जीता स्वर्ण पदक

28 जनवरी से 14 फरवरी 2025 की तिथियों में उत्तराखण्ड में आयोजित 38वें राष्ट्रीय खेल में शान्तिकुञ्ज के जीवनदानी कार्यकर्त्ता श्री रविन्द्र यादव के सुपुत्र चि. रोहित ने स्वर्ण पदक जीत कर शान्तिकुञ्ज और समस्त गायत्री परिवार को गौरवान्वित किया है। चि. रोहित ने यह पदक योगासना टीम इवेंट (दशावतार थीम) में अपने नाम किया है। रोहित का सपना एशियन गेम्स में भारत का प्रतिनिधित्व करने का है।

चि. रोहित ने अपनी सफलता को श्रद्धेय डॉ. प्रणव पण्ड्या जी, श्रद्धेया शैल जीजी, देसंविवि के प्रति कुलपति आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी और अपने पिता श्री रविन्द्र यादव के सतत प्रोत्साहन, मार्गदर्शन का परिणाम बताया। उल्लेखनीय है कि रविन्द्र के पिता भी योग प्रशिक्षक हैं और वे दो वर्ष की आयु से ही रोहित को योगाभ्यास करा रहे हैं।

देव संस्कृति विश्वविद्यालय में अध्ययन करते हुए अब तक राष्ट्रीय स्तर पर 4 स्वर्ण, 3 रजत और 2 कांस्य पदक विजेता रोहित की पहचान 'रबर बॉय' के रूप में है। उसने जिला व प्रांत स्तर पर 62 पदक भी प्राप्त किये हैं।

श्रद्धेया शैल जीजी का शुभाशीष

स्वर्ण पदक जीत कर शान्तिकुञ्ज लौटे चि. रोहित को श्रद्धेया शैल जीजी ने अपने शुभाशीष प्रदान करते हुए गुरुदेव-माताजी से उसके उज्ज्वल भविष्य की प्रार्थना की। उन्होंने कहा कि गुरुदेव-माताजी का संरक्षण, आशीर्वाद हमारे बच्चों में वह आत्मविश्वास जगाता है, जिससे उनकी मेहनत के उत्कृष्ट परिणाम आते हैं।

चि. रोहित श्रद्धेया जीजी से आशीर्वाद लेते हुए

प्राचीन आयुर्वेदिक ज्ञान और आधुनिक विज्ञान का संगम

देव संस्कृति विश्वविद्यालय और जीएस आयुर्वेद मेडिकल कॉलेज के बीच समझौता ज्ञापन (एमओयू) हुआ

देसंविवि और हापुड़ के जीएस आयुर्वेद मेडिकल कॉलेज एवं अस्पताल के बीच 3 फरवरी को एक समझौता ज्ञापन (एमओयू) हुआ। समझौता ज्ञापन पर देव संस्कृति विश्वविद्यालय के प्रति कुलपति आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी और जीएस आयुर्वेद मेडिकल कॉलेज की प्राचार्या प्रो. डॉ. भावना सिंह ने हस्ताक्षर किए।

यह साझेदारी दोनों संस्थानों के बीच शैक्षिक और वैज्ञानिक गतिविधियों को सुदृढ़ करेगी और स्वास्थ्य, आयुर्वेद और योग के क्षेत्र में नए शोध और विकास की दिशा में कार्य करेगी। इसके अंतर्गत संयुक्त शोध परियोजनाएँ, संकाय और छात्रों का आदान-प्रदान, सेमिनार, प्रशिक्षण कार्यक्रम और अंतरराष्ट्रीय अनुदान प्राप्त करने के लिए संयुक्त प्रस्तावों का विकास किया जाएगा। इस सहयोग से प्राचीन आयुर्वेदिक ज्ञान और आधुनिक विज्ञान के संगम से मानव कल्याण के नए अवसर खुलेंगे।

प्रो. डॉ. भावना सिंह एवं आद. डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी एमओयू के दस्तावेजों का आदान-प्रदान करते हुए

शान्तिकुञ्ज के जीवनदानी कार्यकर्त्ता, छत्तीसगढ़ी साहित्यकार श्री पुनीत गुरवंश

भक्तिन माता राजिम पुरस्कार से सम्मानित

गरियाबंद। छ.गढ़

छत्तीसगढ़ प्रदेश साहू संघ राजिम ने 7 जनवरी 2025 को गरियाबंद में मुख्य अतिथि मुख्यमंत्री माननीय श्री विष्णु देव साय, उप मुख्यमंत्री माननीय श्री अरूण साव की उपस्थिति में आयोजित एक भव्य समारोह में शान्तिकुञ्ज के जीवनदानी कार्यकर्त्ता श्री पुनीत गुरुवंश को **'भक्तिन माता राजिम पुरस्कार'** से सम्मानित किया। उन्हें यह सम्मान मानव सेवा, समाज सेवा के लिए एवं छत्तीसगढ़ी भाषा के समृद्धि एवं आगे बढ़ाने वाले उत्कृष्ट साहित्यकार के रूप में सेवाएँ प्रदान करने के लिए दिया गया है।

समारोह में केन्द्रीय नागरिक आवासीय राज्य एवं माननीय श्री तोखन लाल साहू, छत्तीसगढ़ के साहू संघ के अध्यक्ष श्री अटल सिंह साहू, उपाध्यक्ष श्री भूनेश्वर साहू और महिला उपाध्यक्ष श्रीमती मोहन कुमारी साहू की गरिमामय उपस्थिति रही।

श्री पुनीत गुरुवंश ने अपने इस सम्मान को परम पूज्य गुरुदेव एवं परम वंदनीया माताजी का आशीर्वाद मानकर श्रद्धेया शैल जीजी को समर्पित किया, आशीर्वाद लिया।

वसंत पर्व पर युवा मण्डल का गठन

कई युवाओं ने 40 दिवसीय साधना अनुष्ठान आरंभ किया

टोरंटो। कनाडा

परम पूज्य गुरुदेव के पावन बोध दिवस, वसंत पंचमी पर आयोजित विशेष समारोह में गायत्री परिवार टोरंटो ने अपने युवा मंडल के गठन की घोषणा की। शान्तिकुञ्ज से आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी ने इसका स्वागत करते हुए अपना वीडियो संदेश दिया, जिसमें उन्होंने कहा कि आप साथ रहें, मशाल बनें और पूज्य गुरुदेव के कार्यों को संकल्पबद्ध होकर करें। परिवार का अर्थ ही है सदैव साथ रहते हुए एक-दूसरे का सहयोगी बनना।

वसंत पर्व समारोह का संचालन कर रहे टोरंटो के युवा

स्वाध्याय का महत्त्व बताया

परम पूज्य गुरुदेव के जीवन में दिव्य चेतना के अवतरण की स्मृतियों को ताजा करते हुए साधना संबंधी अनेक विषयों पर विचार मंथन हुआ। परिजनों ने स्वाध्याय के प्रति अपनी प्रतिबद्धता व्यक्त करते हुए परम पूज्य गुरुदेव के विचारों के कारण उनके जीवन में आए परिवर्तन के अनुभव साझा किये और अखण्ड ज्योति पत्रिका की सदस्यता ग्रहण की। परिजनों से कहा गया कि पूज्यवर हमारे लिए इतना लिख सकते हैं, तो उनके विचारों का स्वाध्याय करना हमारा परम कर्तव्य बनता है।

अखण्ड ज्योति के लेखों का डाटा बेस

वसंत पर्व समारोह में बताया गया कि मण्डल के एक सदस्य के माध्यम से 1940-2004 तक अखंड ज्योति में प्रकाशित लेखों का एक डेटाबेस तैयार किया जा रहा है। इस डेटाबेस के अनुसार जनवरी 2004 तक पत्रिका में 5865 लेख प्रकाशित किए जा चुके हैं और इस कार्य को करने में 2.5 वर्ष से अधिक समय लगा है। आगे की अखण्ड ज्योतियों पर भी इसी प्रकार कार्य किया जा रहा है।

युवा मंडल के अनेक सदस्यों ने वसंत पर्व से होली पूर्णिमा तक का 40 दिवसीय साधना अनुष्ठान प्रारंभ किया।

विदेश समाचार

टेक्सास में पाँच कुण्डीय यज्ञ

इरविंग,टेक्सास। यूएसए

गायत्री परिवार डलास फोर्ट वर्थ (डीएफडब्ल्यू) ने 19 जनवरी 2025 को स्थानीय एकता मंदिर में पाँच कुण्डीय गायत्री यज्ञ का भव्य आयोजन किया। यज्ञ से पूर्व कलश यात्रा निकाली गई। यज्ञ में विश्वमानवता की सुख, शान्ति, समृद्धि के लिए प्रार्थनाएँ कीं। श्री वैभव पानेरी ने बताया कि कार्यक्रम में विभिन्न धार्मिक, सामाजिक संस्थाओं के श्रद्धालुओं की भागीदारी रही, समापन सभी श्रद्धालुओं द्वारा महाप्रसाद ग्रहण के साथ हुआ, जिसने नगर में सामाजिक एकता एवं आध्यात्मिक नवचेतना को सुदृढ़ किया।

श्रीमती शैलबाला पण्ड्या शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार स्वामी श्री वेदमाता गायत्री ट्रस्ट (टीएमडी) गायत्री नगर, श्रीरामपुरम, शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार द्वारा प्रकाशित तथा उत्तर भारत लाइव, एच.सी.एल. कम्पाउण्ड, सहारनपुर रोड़, निरंजनपुर, देहरादून-248001 (उत्तराखंड) में मुद्रित।
संपादक- प्रमोद शर्मा। **पता** :- शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार (उत्तराखंड), पिन 249411. फोन-(01334) 260602

सम्पर्क सूत्र : पंजीयन एवं पूछताछ
फोन : 01334-311004, 9258369725
ईमेल : pragyaabhiyan@awgp.in
समाचार प्रेषण : news@awgp.org

Publication date: 27.02.2025
Place: Shantikunj, Haridwar
RNI-NO.38653/ 1980
Postel R.No. UA/DO/DDN/ 16 / 2024-26
Licenced to Post Without Prepayment vide WPP No. 04/2024-26